तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:56, Issue: 04
September - 2025, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

सितंबर-2025
रु.20/-

तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

दि.23-09-2025 से दि.02-10-2025 तक

दि.19-07-2025 को तिरुपति में स्थित श्री कामाक्षि देवी सहित श्री कपिलेश्वर स्वामी मंदिर को आंध्र प्रदेश राज्य के माननीय मुख्यमंत्री जी श्री एन.चंद्रबाबू नायडूजी ने दर्शन किया। इस संदर्भ में आर्चकगण ने मुख्यमंत्री जी को आशीर्वचन दिया। 'स्वर्णांध्र-स्वच्छ आंध्र' कार्यक्रम के अंतर्गत मुख्यमंत्री जी ने मंदिर परिसर की सफाई की।

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि।।

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-३०)

हे अर्जुन! यह आत्मा सबके शरीरों में सदा ही अवध्य है। इस कारण सम्पूर्ण प्राणियों के लिए तू शोक करने के योग्य नहीं है।

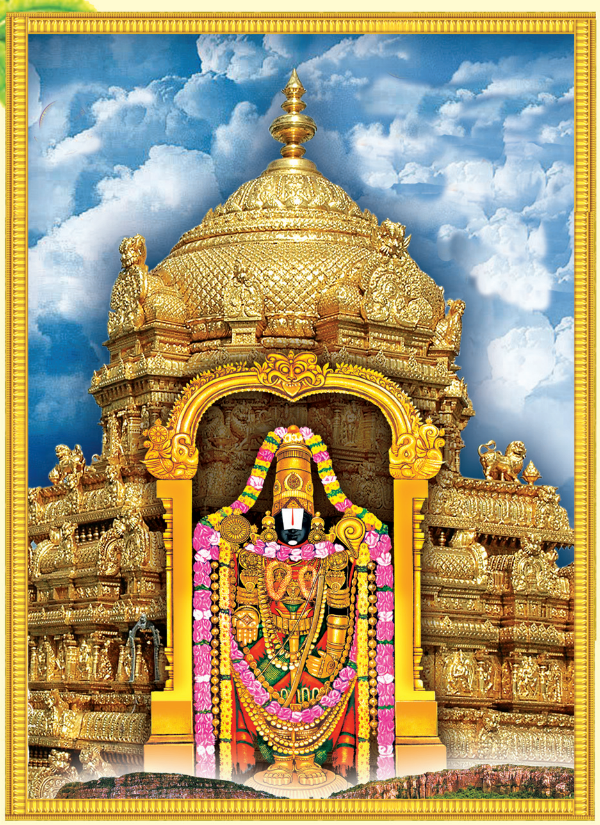

इप्पुडिटु कलगंटि एल्ल लोकमुलकु
नप्पडगु तिरुवेंकटाद्रीशुगंटि ।।इप्पुडिटु।।

अतिशयंबैन शेषाद्रि शिखरमु गंटि
प्रतिलेनि गोपुर प्रभलुगंटि
शतकोटि सूर्यतेजमुलु वेलुगग गंटि
चतुरास्यु पोडगंटि चय्यन मेलुकोंटि ।।इप्पुडिटु।।

कनकरत्न कवाट कांतुलिरुगडगंटि
घनमैन दीपसंघमुलु गंटि
अनुपम मणिमयमगु किरीटमु गंटि
कनकांबरमु गंटि ग्रक्कन मेलुकोंटि ।।इप्पुडिटु।।

अरुदैन शंखचक्रादुलिरुगड गंटि
सरिलेनि अभय हस्तमुनुगंटि
तिरुवेंकटाचलाधिपुनि जूडग गंटि
हरि गंटि गुरुगंटि नंतट मेलुकंटि ।।इप्पुडिटु।।

अन्नमाचार्य, अपने रोमांचक स्वप्नानुभव का वर्णन कर रहे हैं, जिसमें उन्हें तिरुवेंकटाधीश का अलौकिक दर्शन हुआ। सपने में सर्वप्रथम, उन्होंने अति उन्नत शेषाद्रि शिखर को देखा। तदनंतर उन्हें मंदिर की अनुपम प्रभायें दिखायी दीं। शतकोटि कांतियों के बीच चतुरानन के दर्शन हुए। तत्क्षण रत्नखचित स्वर्ण द्वार की कांतियों ने उन्हें चकाचौंध कर दिया। सामने ही रखे हुए बृहत् दीपस्तंभों को उन्होंने देखा। उस कांति में अमूल्य मणियों से जडित स्वामी का किरीट उन्हें दिखायी दिया। उसके बाद कनकांबरधारी प्रभु अनुपम शंख तथा चक्र दोनों हाथों में लिए, सामने प्रत्यक्ष हुए। अन्नमाचार्य का हृदय हर्षपुलकित हो गया और उसी तत्परता में कहने लगे - ''मुझे एक साथ हरि और गुरु का दर्शन हो गया, क्योंकि वे ही मेरे गुरु भी हैं।' इस भावविभोर स्थिति में वे जाग गये।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

सप्तगिरि

पत्रिका चंदा विवरण

- 'सप्तगिरि' ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित एक आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका है।
- 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका में कई आध्यात्मिक अंश प्रकाशित हो रहे है।
- 'सप्तगिरि' पत्रिका तेलुगु, तमिल, कन्नड, हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं में प्रकाशित हो रहे है।
- 'सप्तगिरि' पत्रिका के वार्षिक चंदा रु.240/-.
- 'सप्तगिरि' पत्रिका के जीवन (12 वर्ष ही मात्र) चंदा रु.2,400/-.
- 'सप्तगिरि' पत्रिका विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा रु.1,030/-.
- 'सप्तगिरि' पत्रिका के चंदा भरने के लिए पाठक गण मांगड्राफ्ट(D.D.), ई.एम.ओ (EMO), भारतीय डाकघर(IPO) और ऑनलाइन (ttdevasthanams.ap.gov.in) के द्वारा दर्ज कर सकते हैं।
- 'सप्तगिरि' पत्रिका चंदा केलिए पाठक किसी भी जातीय बैंक में 'चीफ एडिटर, सप्तगिरि मागजैन, टि.टि.डी., तिरुपति' के नाम पर डी.डी. लेकर, डाकघर के द्वारा संबंधित विवरण लिख कर, 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड, तिरुपति' पते को भेजना चाहिए।
- चंदादार अपने घर का पता, पिनकोड, मोबाइल नंबर, वांछित भाषा विवरण स्पष्ट रूप से लिख कर भेजना चाहिए।
- 'सप्तगिरि' पत्रिका समय पर नहीं पहुँचे, तो घर के पते में कोई परिवर्तन हुई, तो यहाँ सूचित ई-मेइल (chiefeditortpt@gmail.com) से कृपया संपर्क करें।
- अतिरिक्त समाचार के लिए दूरभाष-0877-2264543 / 2264359 से संपर्क करें।
- अन्य विवरण केलिए ''प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड, तिरुपति - 517 507'' पते पर संपर्क करें।
- सीधे संपर्क करना चाहिए है, तो प्रधान संपादक कार्यालय के समयों में संपर्क करें।

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-56 सितंबर-2025 अंक-04

विषयसूची

भगवान वेंकटेश्वर के उत्सव - ब्रह्मोत्सव	श्री देवपूजला राजकुमार	07
वामन अवतार - धर्म की स्थापना	डॉ.बी.ज्योत्स्ना देवी	14
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	16
ब्रह्मोत्सव में वाहन सेवा	डॉ.बी.ए.वी.वर्मा	20
पानी का महत्व	डॉ.के.एम.भवानी	25
तिरुमल के आस पास के प्रेक्षणीय स्थल	डॉ.के.सुधाकर राव	27
जननी जयरूपिणी	श्री वी.राजमौलि	31
तिरुमल के वनों की रक्षा और पूजा करना	श्रीमती निशा सतीश	34
श्री वेंकटेश्वर भक्ति चैनल-एस.वी.बी.सी.	श्री नागेंद्र देवरा	38
''तिरुमल-ब्रह्मोत्सवों का वैभव''	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	41
एलोवेरा : घृतकुमारी	डॉ.सुमा जोषि	45
सितंबर महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	48
नीतिकथा - जीवन का सत्य	श्री के.रामनाथन	49
चित्रकथा - गुरु की कृपा शिष्य पर	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 38		52

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - विविध वाहनों पर आरूढ़ श्री मलयप्पस्वामी, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - त्रिदेवता मूर्तियाँ।

गौरव संपादक
श्री जे.श्यामला राव, I.A.S.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रकाशक - संपादक,
प्रधान संपादक (F.A.C.)
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम, M.A., Ph.D.,
P.G. Dip. in JMC

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा, M.A., B.Ed.

मुद्रक
श्री आर.वी.विजयकुमार, B.A., B.Ed.
उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
मुद्रणालय & पुस्तक बिक्री केंद्र,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

हज़ार आँखें भी कम पड़ें ...

जिनमें दिव्यशक्तियाँ होती हैं, वे ही देवता कहलाते हैं। उन्हें ''खेचर'' कहा जाता है - जो आकाश में विचरण करते हैं। बिना किसी वाहन के ही, केवल संकल्प मात्र से ब्रह्मांड में कहीं भी विचरण कर सकने वाली यह शक्ति उन्हीं की होती है। फिर भी, हर देवता का एक विशेष वाहन होता है। मूर्तिपूजा, उत्सव और वाहनसेवा - ये सब केवल परंपरा नहीं हैं, ये प्रतीकात्मक संदेश हैं, जिनके पीछे गहरी भावनाएँ और आध्यात्मिक संकेत छिपे हैं। देवताओं के वाहन केवल उनकी सवारी नहीं, बल्कि उनके गुणों और शक्तियों के प्रतीक होते हैं। हमें इन्हें केवल दिखावे के रूप में ही नहीं, बल्कि गहराई से, तात्त्विक दृष्टिकोण से समझना चाहिए।

विष्णु का वाहन गरुड़ है - जो वेदों का प्रतीक है। इसलिए, विष्णु की वेदमय शक्ति ही गरुड़ के रूप में प्रकट हुई। वाहन वास्तव में देवता की शक्ति का ही एक रूपांतर होता है, और वही शक्ति उनके ध्वज में भी झलकती है। शिव का वाहन वृषभ (नंदी) है। जो धर्म का प्रतीक है। अर्थात, धर्म ही शिव की सवारी है। दुर्गा माता का वाहन सिंह है - जो पराक्रम का प्रतीक है। हनुमंत वाहन उनके दास्य भाव और अडिग विश्वास का प्रतीक है। गज (हाथी) शुभ और महाशक्ति का संकेत है। शेषनाग - भारी भार को सहने की शक्ति का प्रतीक है। कल्पवृक्ष इच्छाओं की पूर्ति का प्रतीक है। सर्वभूपाल वाहन - भगवान के विश्वनाथ (विश्व का स्वामी) स्वरूप का प्रतीक है। घोड़ा तेज का प्रतीक है। रथ देवालय के संचार रूप का, जो विश्व और मानव शरीर दोनों का प्रतीक बनता है।

जब हम उत्सवों में देवतामूर्तियों को विभिन्न वाहनों पर विराजमान देखते हैं, तब वे वाहन उन विशिष्ट गुणों और शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। अगर भक्त उस प्रतीक को समझकर उस शक्ति को अपने हृदय में स्थान देते हैं, तो वे स्वयं भी उस वाहन की भांति - भगवान को अपने भीतर धारण करने योग्य, उनके अनुग्रह के पात्र बन सकते हैं। जिस तरह सम्राट पैदल नहीं चलकर, रथों पर आते हैं - जो उनके पद और गरिमा का चिह्न होता है। उसी प्रकार, देवताओं के वाहन भी दिव्य शक्तियों से संपन्न होते हैं, इसलिए वे आकाश में यात्रा कर सकते हैं।

श्री वेंकटेश्वर स्वामी के ब्रह्मोत्सव में अनेक वाहन सेवाएँ होती हैं। इस सेवाओं का दर्शन करने से स्पष्ट हो जाता है कि श्री वेंकटेश भगवान न केवल सर्वशक्तिमान हैं, बल्कि वे सभी देवताओं के स्वरूप, भक्तों के कल्पवृक्ष, अपार कृपासागर और संपूर्ण ब्रह्मांड में व्याप्त हैं। उनका तत्त्व इतना व्यापक और गहरा है कि उसे शब्दों या मन से समझ पाना संभव नहीं - केवल आत्मा ही उस श्रीनिवास परमात्मा के तत्त्व को अनुभव कर सकती है। देवताओं के वाहन केवल बाहरी यान नहीं - वे ज्ञान-मार्ग हैं, जो जीवों को संस्कारित करके शुद्ध करते हुए ईश्वर की निकट तक पहुँचाते हैं। इसलिए, देवता अपने-अपने वाहनों के माध्यम से हमें अपने प्रतीक रूप में दर्शन देते हैं, हमें आकर्षित करते हैं, और अपनी कृपा वर्षा करते हैं। इन्हें ''उत्सव वाहन'' कहा जाता है - यानी वे जो आनंद फैलाते हैं और दिव्यता को वहन करते हैं। प्रतीक पूजा में, वाहन सहित देवता का ध्यान करना एक विशेष साधना है।

सभी उत्सवों में, श्री वेंकटेश्वर स्वामी का ब्रह्मोत्सव सबसे महान और भव्य होता है। हर वर्ष यह उत्सव अत्यंत उल्लास से मनाया जाता है - भक्तों की आँखों के लिए एक अनुपम दृश्य होता है। इस उत्सव का अनुभव करने के लिए तो हज़ार आँखें भी पर्याप्त नहीं लगतीं! ब्रह्मोत्सवों के दौरान, तिरुमल का हर कोना सौंदर्य और भक्ति से चमक उठता है। ति.ति.दे. इस आयोजन को देवताओं और भक्तों दोनों के स्वागत के लिए बड़े उल्लास से सजाती है। गोविंद नाम स्मरण, विद्युत सजावट, तोरणद्वार और भक्तों की चहल-पहल से तिरुमल एक दिव्य लोक का आभास देता है। इन ब्रह्मोत्सवों में सभी देवता भी उत्साह और श्रद्धा से भाग लेते हैं - और आप सभी आमंत्रित हैं! आइए, आ जाइए! तन, मन और आत्मा से गोविंद में लीन होकर, उसे समर्पित हो जाइए!

आँखें हैं, तो वेंकटेश्वर के दर्शन करें! मुँह है, तो श्रीनिवास का नाम स्मरण करें!! चरण हैं, तो सात पहाड़ियों पर चलें!!!

आइए, उस आदिदेव का दर्शन करें - जो स्वर्ण रथ पर सवार होकर, आकाश को उल्लास से भर देता है।

विना वेंकटेशं ननाथो न नाथः। सदा वेंकटेशं स्मरामि स्मरामि।।

भगवान वेंकटेश्वर के उत्सव - ब्रह्मोत्सव

- श्री देवपूजला राजकुमार

'उत्सव': लोगों को शांति और संपन्नता प्रदान करने हेतु 'उत्सव' मनाया जाता है ("उत्सवम् सर्वलोकानाम् शांति पुष्टिकरम् विदु") यह 'यज्ञ' का ही एक प्रकार है जिसमें सामान्य जन भाग लेते हैं।

वैखानस धर्मग्रंथों के अनुसार उत्सव अथवा त्योहार तीन प्रकार के होते हैं :

1) **कालोत्सवम्** : जो प्रतिवर्ष अवश्य ही मनाए जाते हैं। कभी भी रोका नही जाता।

2) **श्रद्धोत्सवम्** : भक्तों की श्रद्धानुसार उनके द्वारा ही चुने गए दिन को मनाएँ जाते हैं ("इष्टा मासे दिने चेष्टे")।

3) **निमित्तोत्सवम्** : विपांत्त, संकट, आतंक, भय, तनाव, संत्रास, अशांति, व्याकुलता के समय शांति के लिए मनाये जाने वाले उत्सव को निमित्तोत्सव कहा जाता है।

ब्रह्मोत्सव, कालोत्सव का एक भाग है। ब्रह्मोत्सव के दो अर्थ लिए जा सकते हैं :

ब्रह्मोत्सव का प्रारंभ ब्रह्माजी ने किया था, यह भगवान वेंकटेश्वर के अर्चावतार का 'ब्रह्मोत्सव' सृष्टि में शांति के लिए संपन्न किया गया था। ब्रह्मोत्सव की विशिष्टता दर्शाने हेतु एक सुसज्जित छोटा और खाली रथ जिसे 'ब्रह्म रथ' कहा जाता है श्री वेंकटेश्वर स्वामी के उत्सवमूर्ति मलयप्पस्वामी के शोभायात्रा प्रत्येक वाहन के आगे चलता है। यह दर्शाता है कि आज भी उत्सव का संचालन ब्रह्माजी के निर्देश एवं निरीक्षण में ही होता है। भक्तों का विश्वास है कि ब्रह्म उस खाली रथ में बैठकर उत्सव पर दृष्टि रखते हैं। इसीलिए इस उत्सव का नाम 'ब्रह्मोत्सव' है।

ब्रह्म का अर्थ है 'बहुत' और उत्सवम् का अर्थ है 'यज्ञ' इसका अर्थ है मंदिर में मनाए जाने वाले उत्सवों, विधियों, पूजादि में यह उत्सव सर्वश्रेष्ठ और सबसे बड़ा है।

ब्रह्मोत्सव क्यों मनाया जाता है? संक्षेप में कहा जाय तो यह हर वर्ग के जन सामान्य को दर्शन लाभ देने के लिए है जिन्हें मंदिर के अंदर का जाकर मूलविराट मूर्ति के दर्शन का अवसर नहीं मिला है, इनमें विकलांग, वयोवृद्ध या पारंपरिक कारणों से (कुछ वर्गों में यदि मृत्यु हो जाय तो उन्हें कुछ दिनों के लिए मंदिर प्रवेश नहीं करना चाहिए।)

सामान्य मानवीय दोषों के कारण वर्ष भर विधिपूर्वक उत्सव मनाए जाने के बावजूद गलतियाँ होने की संभावना रहती है। इसके कारण मूर्ति की अंदर की ब्रह्मांडीय ऊर्जा (सन्निध्याम्) किंचित कम हो जाती है।

ब्रह्मोत्सवम् में कुंभ (दिव्य जल से भर हुआ कलश या घट) मंदिर के अंदर और होम में स्थापित किया जाता है। ब्रह्मांडीय ऊर्जा को एकत्रित करने हेतु इस कुंभ की नौ दिनों तक विशेष पूजा की जाती है। इस एकत्रित ऊर्जा को ब्रह्मोत्सव के अंत में मूलमूर्ति में स्थानांतरित किया जाता है, इससे गलतियों के कारण आए किंचित कमी की भरपाई होती है। इस प्रकार दोषों को दूर करने 'ब्रह्मोत्सव' मनाए जाते हैं।

एक अन्य उत्सव भी मनाया जाता है जिसे 'पवित्रोत्सवम्' कहा जाता है। यह पवित्रोत्सव वर्ष विधि भर विधान में हुए दोषों के निराकरण हेतु मनाया जाता है। यह 'ब्रह्मोत्सवम्' से थोड़ा भिन्न है।

'ब्रह्मोत्सवम्' का प्रतिफल क्या है? आगम संस्कार रीति रिवाज के अनुसार ब्रह्मोत्सव निष्पादित करने वाले और दर्शन करने वालों के सभी पाप तत्काल समाप्त हो जाते हैं। उनके सभी पिछले दस पीढ़ियों के पूर्वजों और आगामी दस पीढ़ियों को मोक्ष प्राप्त हो जाता है और वैकुंठ में स्थान मिल जाता है जो कि देवताओं के लिए भी अत्यधिक कठिन है। ब्रह्मोत्सव संपन्न होने के पश्चात उस गाँव, शहर, राज्य आदि के निवासियों के रोग दूर हो जाते हैं तथा उनके परिवार जन सभी प्रकार से सुखी एवं संपन्न हो जाते हैं।

पवित्र तिरुमल पर्वत पर कलियुग में भगवान महाविष्णु द्वारा श्री वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में प्राकट्य के शुभ अवसर पर 'ब्रह्मोत्सव' मनाए जाते हैं। भगवान विष्णु भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष में द्वादशी तिथि को श्रवणा नक्षत्र, सोमवार को अर्चावतार मूर्ति के रूप में स्वयंभू प्रकट हुए। वैखानस धर्म ग्रंथों के अनुसार ब्रह्मोत्सव मनाए जाने का शुभ समय भगवत् मूर्ति के जन्म नक्षत्र के आधार पर निर्धारित की जाती है। अनेक विधियों में से इस एक विधि में जन्म नक्षत्र, श्रवणा नक्षत्र है जो कि भगवान

श्री वेंकटेश्वर बालाजी का जन्म नक्षत्र है, यह नक्षत्र नौ दिवसीय ब्रह्मोत्सव के अंतिम दिन चक्रस्नान (अवभृथ स्नान) के दिन होना चाहिए। अतः श्रवणा नक्षत्र के नौ दिन पहले ही ब्रह्मोत्सव का शुभारंभ हो जाता है। उत्सवम् मनाने की तिथि निर्धारण करने में अन्य विधियों में मंदिर के प्रतिष्ठा दिवस, यजमान (मंदिर का ई.ओ.) के जन्म नक्षत्र के अवसर पर अथवा श्रद्धोत्सवम् या काम्योत्सवम् जैसे कि भक्तों द्वारा इच्छित है। ब्रह्मोत्सव में वैखानस भागवच्छास्त्रम के अनुसार सामान्यतः निम्न विधियाँ संपन्न की जाती है। आचार्य रित्विकवर्नम (ब्रह्मोत्सव हेतु अधिकारिक रूप में अर्चना हेतु) कंकणाधारणम् (कलाई का कंगन) उत्सवमूर्ति एवं पूजारियों के लिए।

मृतसंग्रहणम् (अंकुरार्पण और यागशाला अनुष्ठानों हेतु रेत संग्रहण), विशेष पूजा (रेत में भूदेवी की आस्था करके पूजन किया जाता है। अंकुरार्पण (उर्वरता, समृद्धि एवं प्रचुरता के प्रतीक स्वरूप बीजारोपण) संपन्न किया जाता है और इसके साथ ही श्री विष्वक्सेन (श्री नारायण के परिचारक वर्ग प्रमुख) की शोभायात्रा निकाली जाती है। ध्वज दंड स्थापन (काष्ठ स्तंभ की स्थापना जिसमें दिव्य ध्वज, ध्वज पटम्) फहराया जाता है। वास्तु पूजा (यागशाला में शुध्दता संस्कार (वह स्थान जहाँ यज्ञ किए जाते हैं, होम, ध्वज पट प्रतिष्ठा (गरुड़ चित्र वाले दिव्य ध्वज के प्रतिष्ठापन से संबंधित अनुष्ठान) वीसा सान्ता, अनापायिना अर्चनम् (सभी उपस्थित देवताओं की पूजा जैसे अनंत (ब्रह्मांडीय शेषनाग जिस पर भगवान विष्णु शयन करते हैं) गरुड़ (भगवान विष्णु का पक्षी वाहन) सुदर्शन (भगवान विष्णु का दिव्य अस्त्र सुदर्शन चक्र) भेरी पूजा, भेरी ताडनाम (इस संस्कार में दैवीय ध्वनि उत्पन्न करने वाले वाद्य 'भेरी' जिसे तेलुगु में 'सन्ना डोलु' कहा जाता है। इस को विशेष रूप से पूजित किया जाता है और इसका वादन करने वाले व्यक्ति को भी यह कार्य सौंपा जाता है) विशेष संस्कार द्वारा जिसमें वैदिक मंत्रों का उच्चारण किया जाता है।

आलय के प्रथम प्राकार के चारों ओर स्थित दिक्पालों और परिवार देवताओं को 'आलय बलि' ('बलि' या सादा चावल, तुलसी और जल के साथ) समर्पित किया जाता है। अष्ट दिशाओं के अष्ट दिक्पालों का आह्वान करके 'बलि' समर्पित किया जाता है, इन दिक्पलों का आह्वान चारों माड़ावीथियों (मंदिर के चारों ओर मार्गों में) वैदिक मंत्रों के उच्चारण के साथ उनका पूजन करके उत्सव में सम्मिलित होकर उत्सव को अच्छे से मनाए जाने का निरीक्षण करने की प्रार्थना की जाती है। गरुड़ की पूजा एवं ध्वज के आदि देवताओं की पूजा को ध्वज देवार्चना कहा जाता है, ध्वजारोहण के समय ध्वजस्तंभ पर स्थित भगवान के वाहन गरुड़जी का स्नपनम् यानी पवित्र स्नान संपन्न होता है, उन्हें मुद्गन्नम या काली मिर्च और चनेदाल मिश्रित चावल श्री गरुड़ महाराज को चढ़ाया जाता है। इसके पश्चात् गरुड़जी द्वारा सभी देवताओं को ब्रह्मोत्सव में निमंत्रित करने दिव्य ध्वज को ध्वजस्तंभ पर फहराया जाता है।

दूध, दही, शहद, नारीयल पानी, पिसी हल्दी, चंदन से उत्सवमूर्तियों को पवित्र स्नान 'स्नपन तिरुमंजनम' कहा जाता है।

द्विगुना आराधनम् 'द्विगुना निवेदनम'(नौ दिवसीय ब्रह्मोत्सव) के समय ध्रुव बेरा एवं चार अन्य बेराओं को पूजा की जाती है। इसमें विभिन्न भोग सामान्य दिनों में दिये जाने वाले भोग से दुगना भोग लगाया जाता है।

'नव कुंभारोपणम' (यागशाला की वेदिका पर एक पवित्र कुंभ स्थापित किया जाता है, उसमें ब्रह्मांडीय ऊर्जा का आह्वान किया जाता है जिसका नौ दिनों तक पूजन किया जाता है। सभ्याग्नि अघारम (नव कुंभारोपण के अवसर पर अग्नि आहुति।)

नवमुर्त्यार्चनम (कुंभ में ब्रह्मांडीय ऊर्जा का आह्वान (विष्णु के नौ स्वरूप) करके नौ दिनों तक उसकी आराधना! याग दीक्षा कौटुका बंधनम (ब्रह्मोत्सवों में सम्मिलित सभी देवताओं की कलाई में बांधा जाता है।)

सभ्याग्नि प्रधान होमम् (ब्रह्मोत्सवों के प्रथम दिवस अग्नि आहुति।)

कुंभदेव आराधनम् (पवित्र कुंभ की पूजा, पवित्र गर्भगृह में सामान्य पूजा के साथ पवित्र कुंभ की प्रातः, सायं विशेष पूजा।)

उत्सव बलि (सामान्य बलि नैवेद्य के साथ दिक्पालों को प्रथम प्राकार के चारों ओर इन नौ दिनों में प्रातः, सायं, श्री सुदर्शन शोभायात्रा के साथ आमंत्रित अष्ट दिक्पालों को चार माड़ावीथियों में बलि समर्पित की जाती है।

शोभायात्रा (प्रतिदिन प्रातः एवं सायं विभिन्न यात्राएँ निकलती हैं।) स्नपनम् (नौ दिवसीय पर्व का भाग, यह पवित्र स्नान प्रतिदिन मध्याह्न में संपन्न किया जाता है।)

शोभायात्रा की मंदिर वापसी (शोभायात्रा की मंदिर वापसी पर उत्सव की राजोपचारास से पूजा की जाती है (राजा को दी जाने वाली विभिन्न आहुतियाँ।)

निवेदनम् (इस राजोपचारम् के पश्चात् उत्सवमूर्तियों को विशेष भोग समर्पित किए जाते हैं।)

उपचार स्तुति पुष्पांजलि, प्रणामम् (विभिन्न श्रद्धायुक्त यज्ञादि, भगवान विष्णु के चरणों में पुष्प समर्पण, मूर्तियों को प्रणाम।)

उपर्युक्त सभी अनुष्ठान नौ दिवसीय ब्रह्मोत्सवों के प्रथम दिवस ही संपन्न किए जाते हैं। ब्रह्मोत्सव के द्वितीय दिवस से अंतिम नौवें दिवस तक प्रतिदिन प्रातः एवं सायं दुगुनी पूजा एवं दुगुना भोग चढ़ाया जाता है।

इनके साथ ही स्थापित किए गए 'कुंभ' की, गरुड़ ध्वज की भी पूजा की जाती है। यागशाला में प्रतिदिन यज्ञ किए जाते हैं, चारों माड़ावीथियों में 'बलि' की शोभायात्रा निकाली जाती है।

इन नौ दिनों में प्रतिदिन प्रातः, सायं शोभायात्राएँ निकाली जाती हैं। मंदिर की परंपरानुसार स्नपन और विभिन्न प्रकार के विशेष भोग समर्पित किए जाते हैं। प्रतिदिन शोभायात्रा अथवा उत्सव के समापन के पश्चात् उत्सवमूर्तियों हेतु आस्थानम राजोपचारम के साथ संपन्न की जाती हैं (जैसे स्तुति, पुष्पांजलि, प्रणामम्... 14 उपचार।)

कुछ मंदिरों में 'जल कुंकुमोत्सवम्' छटवें दिवस प्रातः मनाने की परंपरा है। यद्यपि वैखानस भागवत शास्त्र में ये सभी अनुष्ठान समाहित हैं तथापि कुछ मंदिरों में ये वैखानस विधान द्वारा किए जाते है या नहीं भी किए जाते हैं। मंदिर विशेष में पूजा विधानों को ग्रंथों द्वारा विशेष रूप से उल्लेखित किया जाना इसका कारण है। यह भी इंगित किया जाता है कि ग्रंथों में उल्लेखित पूजा विधानों की अपेक्षा मंदिर विशेष की पारंपरिक पूजा विधानों को अधिक वरीयता दी जाती है। सातवें दिवस 'गंधोत्सवम्' और 'रथोत्सवम' का विधान बताया गया है। कुछ आलयों में, जैसे तिरुमल आलय में यह संस्कार छटवें दिवस के सायंकाल

को संपन्न की जाती है। आठवें दिवस की दैनिक पूजा के पश्चात् 'श्रियासंवादम्' यानी भगवान विष्णु और उनकी पट्टमहीषियों के मध्य विवाद को उत्सव के रूप में मनाया जाता है।

नवें दिवस दैनिक पूजा के उपरांत 'डोलोत्सवम्' 'चूर्णोत्सवम्' संपन्न किए जाते हैं। इसके बाद 'अवभृथ स्नानम्' मनाया जाता है। इसके पश्चात उत्सवमूर्तियों को वापस मंदिर लाया जाता है, विशेष पूजा की जाती है, विभिन्न वैदिक मंत्रों द्वारा भगवान विष्णु की आराधना की जाती है।

पूर्णाहुति (यज्ञ की समाप्ति) के पश्चात् यागशाला में नित्यार्चना की जाती है। पवित्र कुंभ की ब्रह्मांडीय ऊर्जा को ध्रुवबेरम में प्रतिस्थापित किया जाता है जिससे ब्रह्मांडीय ऊर्जा में किसी संभावित दोष को दूर किया जा सके। इसके पश्चात उत्सवमूर्तियों की शोभायात्रा निकाली जाती है। इस समय प्रधान अर्चक स्वामी अष्टदिक्पालों को बलि समर्पित करते हैं, इसके पश्चात् वैदिक मंत्रों द्वारा उन्हें विदा किया जाता है जिसे 'दिव्य विदाई' कहा जाता है। वापस मंदिर आने पर ध्वजावरोहण में गरुड़ध्वज को झुका दिया जाता है और 'ब्रह्म गोशा' (वैदिक मंत्र, जिनमें पद्यों द्वारा भगवान विष्णु की स्तुति, इस संसार के रक्षार्थ की जाती है।) ध्रुवबेरम के समक्ष की जाती है।

ये विधियाँ ही अधिकांश मंदिरों में अपनाई जाती हैं लेकिन जैसा कि पहले बताया गया है कि मंदिर विशेष की परंपराओं एवं विधानों के अनुसार अनुष्ठानों में विभिन्न समयों पर किंचित परिवर्तन किए जा सकते हैं। इन नौ दिवसीय उत्सवों (अथवा नवाह्निक ब्रह्मोत्सव) में प्रमुख प्रक्रियाओं में रित्विकवर्नम रक्षा बंधनम, मृत्सांग्रहणम्, मेदिनी पूजा, अंकुरार्पणम, ध्वजारोहणम, नावकुंभारोपणम्, आस्थानम्, वाहन सेवा, वसंतोत्सवम् या गंधोत्सवम, रथोत्सवम्, ध्वजारोहणम् और अवभृथ स्नानम् हैं।

आचार्य रित्विकवर्नम :

नवाह्निका ब्रह्मोत्सवों के प्रारंभ होने के पहले आचार्य रित्विकवर्नम संपन्न किया जाना होता है। इस प्रक्रिया में ब्रह्मोत्सवों हेतु अधिकारिक तौर पर अर्चकों को चुना जाता है जो विभिन्न अनुष्ठानों को संपन्न करते हैं। इन अर्चक स्वामियों में एक मुख्य अर्चक, चार अर्चकों, पाँच सहायक अर्चकों का विधान है। स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार इसमें परिवर्तन किया जा सकता है। संकल्प के पश्चात् इन अर्चकों को

जुलाई-2025 महीने का क्विज-36 के समाधान

1) श्री महाविष्णु, 2) पाँचवे वर्ष में,
3) यंत्रोद्धारक हनुमान मंदिर,
4) श्री सुब्रह्मण्य स्वामी, 5) शिव-पार्वती
6) गणेश महराज, 7) कपिलतीर्थ,
8) मधुरवेणि नाच्चियार,
9) चतुरंग कोल विमान,
10) विनता, 11) गरुड़ा,
12) आणिवर आस्थान,
13) दुर्योधन, 14) द्रोणाचार्य,
15) बृहस्पति.

जुलाई-2025 महीने का क्विज-36 के समाधान के विजेता
चि. प्रीतम कुमार
चंदा नंबर : IM1606240897

दीक्षा वस्त्र (या अधिकारिक वस्त्र, सामान्यतः तिरुमल में पीली धोती) प्रदान किए जाते हैं। ये अर्चकगण 'पंचगव्य प्रसानम्' (गौमाता से संबंधित पांच द्रव्य दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र) का निर्वहन करते हैं तथा अनुष्ठान करने की योग्यता प्राप्त करने हेतु 'अकाल्माशा होमम्' करते हैं। इसके पश्चात् 'प्रतिसार बंधनम'। इस क्रिया में अर्चकों के दांई कलाई में 'रक्षा बंधनम्' बांधा जाता है जिससे वे बिना किसी बाधाओं या दोषों (जैसे, जातशौच, मृतशौच) के बिना अनुष्ठानों को संपन्न कर सकें।

मृतसंग्रहणम् :

'मृत' यानी रेत और 'संग्रहणम्' यानी एकत्रित करना अर्थात 'मृतसंग्रहणम्' का अर्थ है उस स्थान से रेत का संग्रहण करना जहाँ पर कोई पैर न रखता हो। साधारणतः चींटियों की बांबी से रेत ली जाती है। यह अंकुरार्पण का भाग है, यह अंकुरार्पण के समय संपन्न होता है। आचार्यगण, रित्विक, परिचारक, भक्तगण, यजमान रेत संग्रहण के लिए प्रस्थान करते हैं, रेत संग्रहण हेतु मंदिर की पूर्व, पश्चिम या दक्षिण पश्चिम दिशा का निर्धारण किया गया है। भगवान श्री विष्णु के परिचारक वर्ग के प्रधान श्री विश्वक्सेन भी शोभायात्रा में सम्मिलित किए जाते हैं। चोटियों की बांबी को खोदकर रेत एकत्रित की जाती है, इस रेत के बीच भूदेवी (धरती माता) का आकार निर्मित किया जाता है। यह आकार ध्रुवबेरम के कंधों या छाती तक ऊँचा होता है जिसका मुख उत्तर पूर्व दिशा की ओर होता है। इस भूदेवी की आकृति को साड़ी एवं अन्य अलंकारों से अलंकृत किया जाता है। 11 उपचारम् से इस मूर्ति की स्तुति की जाती है। चक्र, विष्वक्सेन, गरुड़, शेष की पूजा की जाती है। एक स्वर्ण पात्र में रेत एकत्रित किया जाता है और माता भूदेवी को ब्रह्मांडीय विदाई दी जाती है। इसके पश्चात् यह शोभायात्रा मंदिर की यागशाला पहुँचती है और अंकुरार्पण मंडप मिट्टी के पात्रों को यानी 'पलीका' में रेत भरी जाती है।

अंकुरार्पण :

इसका अर्थ है 'बीजारोपण'। इसका निर्वहन मंदिर योग्य भूमि की परीक्षा के समय, प्रतिष्ठा, अभिषेक, उत्सव और स्नपन के समय किया जाता है। इसे उत्सव प्रारंभ होने के 9,7,5,3,1 दिन पहले संपन्न किया जाना होता है। यह सभी वैखानस पध्दति के उत्सवों में एक महत्वपूर्ण संस्कार है। ग्रंथों के अनुसार ऐसा कोई भी उत्सव जो अंकुरार्पण के बिना मनाया जाता है, प्रेताविष्ट होता है अतः यह अवांछनीय है। साली, व्राही, यावा, मुद्गा, माशा, प्रियांगु गोधुमा, सरशा, पाचानका, तिल, तिलवा, मसूरा के बीज अंकुरण हेतु उपयोग में लाए जाते हैं। शास्त्रों के अनुसार कोई भी उत्सव जो अंकुरार्पण के बिना मनाए जाते हैं वे पैशाचिक होते हैं इसलिए ऐसे उत्सव अवांछनीय हैं। अंकुरार्पण,

वैखानस आगमोक्त पध्दति के सभी उत्सवों में अति महत्वपूर्ण क्रिया है। शास्त्रों के अनुसार बीजों में जो अंकुरण होता है उसके अनुसार उत्सवों की संपन्नता का संकेत प्राप्त होता है उदाहरणार्थ अंकुरण काला है तो वे संपत्ति की हानि दर्शाते हैं, लाल रंग अन्यों के साथ शत्रुता, नीचे की ओर अंकुरण व्याधियों और अंकुरार्पण नही होना मृत्यु का संकेत है। ये संकेत देश अथवा यजमान के लिए भविष्यवाणी है। बीजारोपण को शक्ति प्रदान करने वाला देवता चंद्र अथवा सोम है। अतः इसे साधारणतः सायंकालीन चंद्र की उपस्थिति में किया जाता है। वेदमंत्रों के उच्चारण के साथ आदिदेवों की आराधना की जाती है, नौ दिनों तक अंकुरण की ध्यानपूर्वक देखभाल की जाती है, प्रतिदिन चंद्र देव की पूजा की जाती है।

ध्वजारोहणम् :

भगवान मलयप्पस्वामी (भगवान वेंकटेश्वर स्वामी बालाजी की उत्सवमूर्ति) और दोनों देवियों श्रीदेवी, भूदेवी की मूर्तियों को बहुमूल्य आभूषणों एवं पुष्पों से अलंकृत किया जाता है। ब्रह्मांडीय ध्वजा फहराने अथवा ध्वजारोहणम् के पहले ये यागशाला के सम्मुख आह्वानिक अनुष्ठान हेतु विराजमान होते हैं। ध्वजारोहणम् में पीले वस्त्र पर गरुड़जी के साथ सूर्य, चंद्र और अष्ट मंगल (आठ शुभ चिह्न) चित्रित किए जाते हैं जिसे ध्वजपटम् या ब्रह्मांडीय ध्वज कहा जाता है, फहराने के लिए! ये चित्र श्री वेंकटेश्वर स्वामी के मूलविराट मूर्ति या ध्रुवबेरम् के कंधो, कानों, छाती अथवा उदर तक ऊँचे होते हैं। विभिन्न वेदमंत्रों के उच्चारण एवं यज्ञों के साथ इस ध्वज का अभिषेक किया जाता है। गरुड़जी के कपड़े पर चित्र को सायानाधिवासम्, होत्रम् आदि के साथ वेदमंत्रों और अग्नि यज्ञ द्वारा वस्त्र पर स्थित गरुड़जी के चित्र

में गरुड़जी का आह्वान किया जाता है। अब भेरी पूजा, भेरी 'ताडानाम' संपन्न किए जाते हैं। भेरी का अर्थ है ढोल, जिससे दिव्य संगीत उत्पन्न किया जाता है, देवताओं का आह्वान किया जाता है। ध्वजारोहण उत्सव के पहले ब्रह्म, इन्द्र, यम, निरुति, वरुण, वायु, कुबेर, इशान को प्रधानाचार्य द्वारा निमंत्रित किया जाता है, चारों माड़ावीथियों में उनके स्थानों पर नौ दिनों तक ब्रह्मोत्सव में पूजन किया जाता है। शोभायात्रा के पश्चात् पूजन करते हैं। अब अष्ट दिशाओं का दिक्पालों की स्तुति, स्तुति मंत्रों या गद्यों द्वारा की जाती है। गरुड़जी के पूजन के लिए यज्ञों के रूप में आठ उपचार संपन्न किए जाते हैं। अब उत्सव के शुभ मुहूर्त पर ध्वज फहराया जाता है।

ॐ नमो वेंकटेशाय!

वामन अवतार - धर्म की स्थापना

- डॉ.बी.ज्योत्स्ना देवी

पवित्र त्रिदेवों में दूसरे स्थान पर भगवान विष्णु है जो संसार की रक्षा करते है। वे आवश्यकता पडने पर बुराई को हराने, धर्म की पुनर्स्थापना करने और धार्मिकता की स्थापना करने के लिए पृथ्वी पर अवतार लेते है।

वामन अवतार भगवान का एक ऐसा ही पवित्र अवतार है और इसे उनके 10 प्रसिद्ध अवतारों में से पाँचवा माना जाता है।

माना जाता है कि यह अवतार त्रेतायुग में लिया गया था। वामन भगवान विष्णु के वामन अवतार को संदर्भित करता है, जो संरक्षण और पोषण के देवता है।

संस्कृत शब्द 'वामन' एक शब्द है जिसका प्रयोग ''बौने'' के लिए किया जाता है, और इस अवतार में भगवान एक आभासी भिक्षुक के रूप में प्रकट होते है।

भगवान विष्णु के वामन अवतार का महत्व - कथा

भगवान विष्णु के वामन अवतार की कहानी असुर राजा महाबली पर केंद्रित है। महाबली भगवान प्रह्लाद के पोते, भगवान विष्णु के भक्त और विरोचन के पुत्र थे। कहानी की शुरुआत देवताओं द्वारा समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत को पीकर अमर हो जाने से होती है। असुरों और दैत्यों की सेना को भगवान इंद्र की सेना से हरा दिया था।

इसके बाद दैत्यराज बलि ने शुक्राचार्य ऋषि से सलाह मांगी कि वे उसे ऐसा समाधान दे जिससे बलि को अपनी शक्तियाँ और राज्य वापस पाने में मदद मिल सके। ऋषि शुक्राचार्य ने महाभिषेक विश्वजित यज्ञ करने के लिए कहा।

राजा बलि ने अपने आचार्य की बुद्धिमानी भरी बाते सुनकर तुरंत सहमति दे दी और उनके मार्गदर्शन में यज्ञ करने लगे। यज्ञ पूरा होने पर राजा बलि को एक स्वर्ण रथ भेंट किया गया, जिसे पवन गति से चलने वाले घोंडों द्वारा खींचा जा रहा था।

इसके अलावा, उन्हें दिव्य कवच, सिंह के सिर वाला ध्वजस्तंभ और बाणों से भरा एक तरकश भी दिया गया। उन्हें एक शंख भी दिया गया जिसे बजाने पर गर्जना जैसी ध्वनि निकलती थी और एक ऐसा माला भी दी गई जो कभी नही मुरझाती। अपनी नई सम्पत्तियों से सुसज्जित होकर राजा बलि भगवान इंद्र के विरुद्ध युद्ध भूमि में उतरा और इस बार राजा बलि विजयी हुआ।

अपने आचार्य को धन्यवाद देते

हुए उसने एक बार फिर उनसे सलाह मांगी कि वह अपना भाग्य कैसे बनाए रख सकता है। और उसके गुरु ने उसे बताया कि जब तक वह यज्ञ करता रहेगा, तब तक वह एक शक्तिशाली और अजेय जीवन जी सकता है। उसे गरीबों और ब्राह्मणों की भी मदद करनी चाहिए।

दूसरी ओर, भगवान इंद्र बृहस्पति ऋषि के पास यह जानने के लिए गए कि क्या उनके लिए बलि को परास्त करने और अपनी शक्तियों को वापस पाने का कोई तरीका है। फिर उन्हें भगवान विष्णु की खोज करने का निर्देश दिया गया।

भगवान इंद्र ने भगवान विष्णु की पूजा करके उनकी सहायता प्राप्त की। भगवान इंद्र की माता अदिति, महर्षि कश्यप की पत्नी ने अपने पुत्र की सहायता के लिए भगवान विष्णु से प्रार्थना की। भगवान विष्णु ने भगवान इंद्र की सहायता करने और बलि का वद करने का वचन दिया।

अपने वचनों के अनुसार अदिति ने एक पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम वामन रखा। तब भगवान विष्णु ने वामन का अवतार लिया और ब्राह्मण का वेश धारण किया और उस स्थान पर गए जहाँ शुक्राचार्य और दैत्यराज बलि द्वारा यज्ञ किया जा रहा था।

राजा बलि ने युवा ब्राह्मण से पूछा कि वह क्या चाहता है। वामन ने राजा बलि की ब्राह्मणों और गरीबों के प्रति उदारता की प्रशंसा की और उनसे अपने तीन कदमों के बराबर भूमि मांगी। दैत्यराज बलि ने इस युवा विचित्र बालक की इच्छा पूरी करने के लिए सहमति जताई।

सहमत होने पर, उस युवा लडके का छोटा रूप आकार में बडा हो गया। कुछ ही समय में वह पूरे ग्रह से भी बडा हो गया। उसने एक कदम रखा जिससे पूरी धरती ढक गई और अगले कदम ने आकाश को ढक दिया जो अमरावयो है, और उसने राजा बलि की ओर देखा और उससे पूछा कि तीसरा कदम कहाँ रखे। राजा बलि ने अपना वचन निभाने के लिए, वामन से कहा कि वह तीसरा कदम अपने सिर पर रख दे।

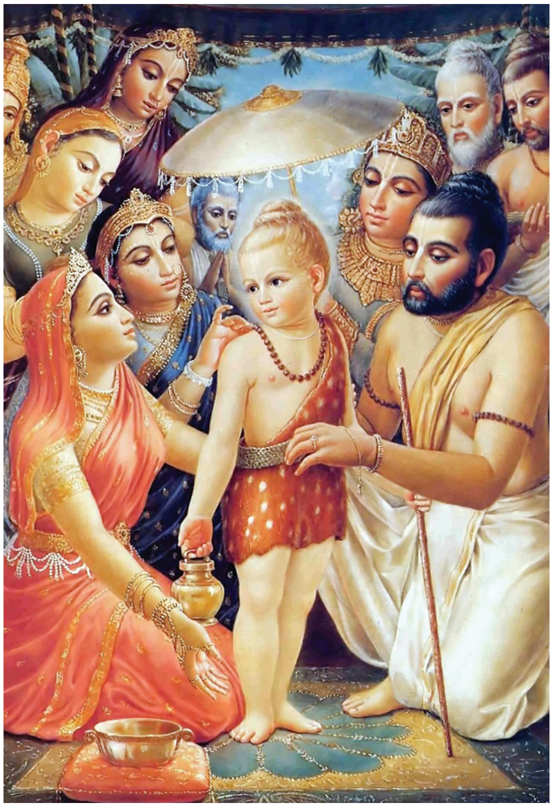

यह सुनकर भगवान विष्णु अपने वास्तविक रूप में प्रकट हुए और राजा बलि को आशीर्वाद दिया तथा उसे पाताल लोक पर शासन करने की अनुमति दी।

इस प्रकार बलि पाताल लोक चला गया। भगवान विष्णु के वामन अवतार के कारण इंद्र और अन्य देवताओं ने अमरावती पर कब्जा कर लिया।

प्रतीकवाद

वामन की कहानी प्रतीकात्मकता से भरपूर है, जो अहंकार और अभिमान पर विनम्रता और भक्ति की जीत का प्रतिनिधित्व करती हैं। यह ब्रह्मांड में सृजन, संरक्षण और विनाश की चक्रीय प्रकृति का भी प्रतीक है।

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

चतुर्थ आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

नारायणवन पुर वर्णन :

''इस पर्वत के नीचे अमरावती के रूप में प्रकाशवान एक नगर है। वह नगर ऐसा है। उस नगर में वेद वेदांग प्रवीण, वेदांत वेत्तों के रूप में प्रचलित विप्रगण, प्रबल बहु शौर्य पटु भूपाल, मणिकांचनोज्वल सुंदरीगण, अधिक संपन्न वैश्यगण, ब्राह्मण और अन्यों की सेवा करनेवाले शुभ धुरंधर शूद्र जन रहते हैं। इन सब के होते वह नगर गोपुर, ललित, कलित, रत्नकांति, परिभ्रांत राजहंस, पथनिरोधक सालविभ्राज के होते नारायणवन पुर अत्यंत प्रसिद्ध हुआ है। उस नगर पर महामह आकाश राज धर्मात्मा के रूप में शासन कर रहे हैं। सज्ञनों के अभीष्ट के अनुसार जनों को सुशासन दे रहे हैं। गुरुजन आदि बुजुर्गों पर सुभक्ति और विनय के साथ सेवा करनेवाले राजा को देखकर देवतागण भी राजा की प्रशंसा करते रहते हैं। सप्तांगों को अपने अधीन में रखकर, आत्मा के अंदर दुष्टांग रीति को त्याग करके, बाह्य शत्रुओं को हराकर, अंतर्विरोधियों को दबा कर, बाह्य पुण्यादि प्रभावों को देखते हुए, अंतरादि पर आत्मा को खडा करके, बाह्य चक्रों को उत्साह से नियंत्रण में रखकर, अंदर के चक्रों के दर्शन करके, दीनजनों के उद्धारक, विष्णु चरणों में समर्पित, विष्णु पर मन को केंद्रित करके, आकाश और पृथ्वी पर शासन करनेवाले उस आकाश राज को तोंडमान नामक एक परम भक्त लाडला भाई है। वसुदान नामक एक पुत्र है। पत्नी धरणी देवी और पुत्रिका सरस मानस पद्मावती है।'' ऐसा चक्री ने नारायणवन पुर वर्णन और उसके साथ आकाश राज का परिचय भी दिया। तब वकुला मालिका ने ''ठीक है हे पुत्र! इस पर्वत से उतरने के मार्ग को बताओ!'' पूछा। तब माधव ने इस रूप में कहा। ''हे जननी! ठीक से बताऊंगा। सुनो। हे माता! इस मार्ग से पर्वत से उतर कर, वहाँ प्रवाहित होनेवाले पावन पुण्य तीर्थ में स्नान करके, उस के समीप में मुनि से पूजादि प्राप्त करनेवाले शिवलिंग के दर्शन करके, पूजा करके, श्रीनिवास का विवाह शीघ्र ही हो'' ऐसी मनौती शिव से करके, आगे शुकाश्रम पहुँचना है। वहाँ रहनेवाले शुक महर्षि को प्रणाम करके, वहाँ से अगस्त्य आश्रम पहुँच कर उस मुनि को दंडवत

करके, अगस्त्य मुनि निर्मित शिवालय पर जाकर शिव भगवान की पूजा करनी चाहिए। वहाँ रहनेवाली स्त्री जनों का अनुसरण करते हुए उन के साथ नारायणवन पुर पहुँचना है। वहाँ पर राज-पत्नी के समीप पहुँचकर मुझे विवाह के लिए पद्मावती अनुकूल है। ऐसा उन से कहना है। हरि की इन बातों को सुन कर वकुला मालिका ने कहा। ''हे देव! सुनिए। अगर वे आप के वृत्तांत के बारे में पूछेंगे तो मैं क्या बताऊँ?'' ऐसा वकुला मालिका के पूछने पर वासुदेव ने कहा। ''हे माँ! अगर वे पूछेंगे तो वर चंद्रकुल का है, वसुदेव और देवकी मेरे माता-पिता बताओ। बलराम देव, सुभद्रा मेरे भाई और बहन बताओ। गोत्र वशिष्ट गोत्र बताओ। नक्षत्र के बारे में पूछेंगे तो बताओ कि श्रवणा नक्षत्र है। ललित, यौवन, सौंदर्य कलित के रूप में मुझे बताओ। मानधन और विभव निधान के रूप में बताओ। अवनि में पद्मावती के लिए अनुकूल पुरुष के रूप में बताओ।''

वकुला के द्वारा नारायणवन पुर जाना

चक्री ने नारायणवन पुर जाने के मार्ग आदि के बारे में बता कर 'होकर आओ' ऐसा वकुला मालिका से कहा। तब देव माया निर्मित एक घोडा वहाँ पहुँच गया। तब वकुला मालिका संतोष के साथ हरि से आज्ञा लेकर घोडे पर सवार होकर पहाड से उतर गयी। श्रीनिवास की आज्ञा के अनुसार ही वहाँ प्रवाहित पुण्य तीर्थ में स्नान करके कपिलेश्वर के दर्शन करके उन्हें नमस्कार करके, बाद में शुक और अगस्त्य को

प्रणाम करके शिवालय पहुँच गयी। वहाँ पर शिव की पूजा करके बैठ गयी। वहाँ पर रहनेवाली कन्याओं से एक कन्या को बुलाकर वकुला ने इस रूप में पूछा।

''हे सखि! तुम कौन हो? किसकी हो! ठीक ठीक से बताओ।'' पूछने पर वह चिंता करते हुए वकुला की तरफ देखकर धीरे-धीरे इस रूप में कहा। ''मैं आकाश राज की पुत्री पद्मावती की सखी हूँ।'' यह सुन कर अत्यंत स्नेह के साथ वकुला मालिका ने उस की तरफ देखकर ''तुम्हारा चेहरा क्यों उतरा हुआ है? बताओ।'' कहने पर उस कन्या ने कहा। ''तुम को कैसे बताऊंगी।'' कहने पर उस सखी की ओर देख कर वकुला ने कहा। ''बिना छिपाकर अपने मन में जो कुछ है मुझे बताओ।'' कहने पर फिर उसने धीरे-धीरे कहा। ''हे माँ! कल वनविहार करने की इच्छा से राजा की पुत्री हमें साथ लेकर वन में आयी थी। तब हम सब के खेलते समय अचानक वहाँ पर एक शबर आ गया। वह कैसा था? काले काले वर्ण का था, ललित सद्भूषण अलंकृत था, आजानुबाहु था, कमललोचन था, सर्वेंद्रिय सुंदर वदन वाला था, भासुर था, गंभीर वक्षवाला था, कंबु कंठवाला था, महनीय मन्मथ आकारवाला था। बडे घोडे पर आरूढ होकर आया था। हाथ में धनु और बाण थे। महा पराक्रमी था। उसने हमारी राज कन्या के समीप आकर कितनी कितनी बातें कीं? तब उस शबर पर राज कन्या ने गुस्सा करके पथराव करवाया। उस का घोडा घायल होकर नीचे गिर गया। वह उत्तराभिमुखी होकर वहाँ से चला गया। उस के बाद पद्मावती अपने निजी महल लौट गयी।

उस शबर की बुरी दृष्टि की वजह से राज कन्या को महाताप ज्वर हुआ। बिना बोले तपनेवाली पुत्री को देखकर उस का पिता आकाश राज और उस की माताजी धरणी देवी पुत्री को गोद में बिठाकर बहु प्रकार से दुःखी होकर पद्मावती को ज्वर से मुक्त करने के लिए बृहस्पति को बुलाया। उस महात्मा के आना देखकर उठकर अर्घ्य पादादि के साथ राजा ने उनकी पूजा करके कनकासन पर बिठाया। उस मुनि को पद्मावती को दिखकर रोते हुए राजा ने इस रूप में कहा।

"हे देशिक! पद्मावती को महाताप ज्वर हुआ है। रात को वह सो नहीं पायी। ताप से करवटें बदलती रही। उस के ताप को दूर करने के लिए आप कोई औषध दीजिए।" राजा की बातें सुन कर गुरु ने कहा। "हे नृपाल! इस बालमणि को प्राण भय नहीं है। चिंता मत कीजिए। विप्रों से शिव को रुद्राभिषेक करवाइए।" बृहस्पति के इस रूप में कहने पर राजा ने ब्राह्मणों को यहाँ भेज कर फल, फूल आदि वस्तुओं को हमारे साथ यहाँ भेजा है। हे समझ गयी।" इस रूप में पद्मावती की सखी ने वकुला से बताया। फिर उसने वकुला से सवाल किया। "कहाँ से प्रातःकाल ही यहाँ पर आयी हो? किस काम से आयी हो? सच सच बताओ।" पूछने पर स्नेह के साथ वकुला मालिका ने कहा। "हे सुनो ललितांगी! मैं वेंकटेश्वर की दासी हूँ। प्रातःकाल ही एक काम से यहाँ पर आयी हूँ। यहाँ से नगर पहुँच कर अंतःपुर जाकर वहाँ धरणी देवी से आप्त वाक्य कहना है। उसी काम से आयी हूँ।" वकुला ने ऐसा कहा। "शिव के अभिषेक पूरा होने तक तुम यहाँ रहोगी तो मैं तुम को साथ ले जाऊंगी।" इस रूप में सखी ने कहा। उसके साथ जाने के लिए वकुला वहीं पर रह गयी। उधर फणींद्र शैल पति पद्मावती पर मोहित होकर चिंता कर रहे थे। यह कहते सुन कर।

आश्वासांत

दिवाकर लोचन! दामोदर! शंख चक्रधर! भवहर! सुतामोद्धारा! सद्गुरु वर! श्रीमद्वेंकट गिरींद्र! जितदनुजेंद्र!

सुरुचिर गुणधामा! शुभ्रसत्कीर्ति कामा! मुरदनुज विरामा! मोक्ष कल्याण सीमा! गुरुतर शुभनामा! घोर देवारि भीमा! द्विरद कुमुद सोमा! देवता सार्वभौमा!

यह श्री तरिगोंडा लक्ष्मी नृसिंह करुणा कटाक्ष कलित काव्य विचित्र वशिष्ट गोत्र पवित्र कृष्णयामात्य की पुत्री वेंगमांबा प्रणीत श्री वेंकटाचल माहात्म्य नामक भविषोत्तर पुराण में इष्ट देवता प्रार्थना, शौनकादि के प्रश्न, जनक शतानंद का संभाषण, वृषभासुर के हाथों में पीडित तापसियों के द्वारा अपनी बाधाओं को वराह स्वामी से बताना, हरि वृषभासुर से अनेक वर्ष युद्ध करके तदुपरांत उसे मोक्ष प्रदान करना, अंजनादेवी के द्वारा वृष शैल पर तप करके हनुमान को प्राप्त करना, शेष और मारुत का संवाद, शेषाद्री का परिमाण और प्रभाव, माधव नामक विप्र की कथा, वेंकटेश्वर का फिर से वैकुंठ पहुँचना, उन के वैकुंठ में पहुँचने का समाचार नारद के द्वारा ब्रह्म को

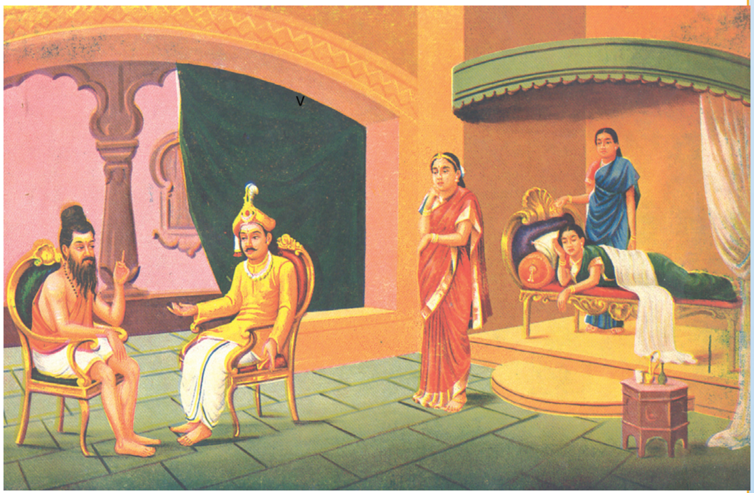

बताना, नारद के द्वारा मुनिगण को त्रिमूर्तियों की परीक्षा करने के प्रयत्न करने का उपदेश देना, भृगु के द्वारा त्रिमूर्तियों की परीक्षा करना, हरि से लक्ष्मी प्रणय कलह करके कोल्हापुर पहुँचना, श्रीहरि वैकुंठ को छोड कर शेषाद्री पर वल्मीक में दुबक कर रहना, ब्रह्म और रुद्र धेनु और वत्स के रूप में वेशधारण करके वल्मीक के गर्भ में रहनेवाले हरि को दूध देकर तृप्त करना, चोल राज की पत्नी के द्वारा गोप को डांटना, हरि के सिर पर गोप के द्वारा परशू से मारना, चोल राज को चक्री के द्वारा शाप देकर भेजना, बृहस्पति के द्वारा हरि को औषध के बारे में बताना, शौनकादि का पश्चाताप, वल्मीक, तिंत्रिणी, पर्वत का प्रभाव, वराह और श्रीनिवास के संवाद, वराह स्वामी के द्वारा हरि को भूमि देना, वकुला मालिका का वृत्तांत, आकाश राज का वृत्तांत, पद्मावती का भूमि से उदय होना, वसंत ऋतु का वर्णन, पद्मावती का वन विहार, पद्मावती और नारद के संवाद, श्रीनिवास के द्वारा मृगों का आखेट करना, पर्वत से उतर कर हरि के द्वारा हाथी की रक्षा करना, हरि के द्वारा वन मध्य में पद्मावती को देखकर उस का वर्णन करना, पद्मावती की सखियों को स्वामी अपना वृत्तांत सुनाना, हरि पद्मावती से श्रृंगारोक्तियों से बात करना, पद्मावती गुस्सा करते हुए सखियों से हरि पर पथराव करवाना, चक्री भाग कर शेषाद्री पर वल्मीक में छिप जाना, पद्मावती का निज गृह लौटना, हरि के द्वारा विरह ताप को प्राप्त करना, वकुला से हरि अपने ताप के बारे में बताना, हरि राम कथा को वकुला को सुनाना, वकुला को स्वामी वेदवती का वृत्तांत सुनाना, वकुला के द्वारा स्वामी की स्तुति करना, नारायणवन पुर का वर्णन, वकुला के द्वारा नारायणवन पुर जाना, वकुला के द्वारा पद्मावती की सखियों से बात करना आदि कथांशवाला यह चतुर्थाश्वास है।

चतुर्थ आश्वास समाप्त।

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र).

ब्रह्मोत्सव में वाहन सेवा

- डॉ.बी.ए.वी.वर्मा

कलियुग दैव श्री वेंकटेश्वर स्वामी के ब्रह्मोत्सव इस वर्ष सितंबर 23 मंगलवार शुरू होकर 2 अक्तूबर (गुरुवार) समाप्त होता है। यह ब्रह्मोत्सव सेनाधिपति उत्सव, अंकुरार्पण से शुरू होता है। चक्रस्नान से समाप्त होता है। इस उत्सव में विशेष वाहन सेवा आयोजित हैं।

अंकुरार्पण

यह वाहन सेवा का पूर्व संध्या पर किया जाता है। पवित्र पूजा स्थल केलिए अर्चकगण यज्ञशाला को शुद्धि करते हैं। गो ढंग युक्त पवित्र मिट्टी पवित्र जल से मिलाकर नौ चाँदी या मिट्टी के कलश में नवधान्य को डालते हैं। उन से अंकुर उगते हैं। ये बुद्धी विकास और विजय का संकेत माना जाता है।

ध्वजारोहण

यह मीन लग्न में किया जाता है। ध्वजस्तंभ के ऊपर गरुड़ पताका फहराया जाता है। उस के पहले स्वामी के उत्सवमूर्तियों को विमान प्राकार और चार माड़ावीथियों में परिवारदेवता, अनंत, गरुड़, चक्रत्ताल्वार, विष्वक्सेन सहित परिक्रमा किया जाता है। वेद मंत्र और गरुड़ गद्य रट जाता है।

महाशेष वाहन

पहला दिन शाम को श्रीदेवी, भूदेवी सहित श्री वेंकटेश्वर स्वामी दर्शन देते हैं सात फणि युक्त आदिशेषु जो आभूषण और पुष्पों से अलंकृत रथ में। यह यात्रा भक्त जन को दर्शन और आशीर्वाद देते चार माड़ावीथियों में चलते हैं। आदिशेषु भक्ति और ज्ञान का प्रतीक है। आदिशेषु

के सात फण तिरुमल के सात पर्वत का प्रतीक है। मलयप्पस्वामी के इस वाहन सेवा करनेवाले भक्त जन को कलि प्रभाव से मुक्ति मिलता है।

लघुशेष वाहन

उत्सवमूर्ति भगवान श्री मलयप्प स्वामी लघुशेष (पाँच फण वाले) वाहन में भक्त गण को दर्शन देते हैं। आभूषण और फूलों की मालाओं से अलंकृत यह वाहन यात्रा कुंडलिनी शक्ति को जागृत करने का संकेत है। यात्रा में शामिल भक्त 'गोविंदा' या

'गोविंदाय नमः' नारा लगाते भक्ति विभोर होते हैं।

हंस वाहन

दूसरे दिन शाम यह वाहन यात्रा हंसाकृति स्वर्ण रथ में, ऊँजल सेवा के बाद चार माड़ावीथियों में होता है। यहाँ भगवान वीणाधारी होकर दर्शन देता है। यह मंदिर के दीपालंकरण से बहुत उज्ज्वल रहता है।

यह कला, संस्कृति और भक्ति का संगम है। इस वाहन के स्वामी शुद्धता और नैतिकता का संकेत है। भक्त जनों को हंस जैसा क्षीर-नीर का पहचान करने की क्षमता मिलता है।

सिंह वाहन

तीसरा दिन सुबह सिंह वाहन सेवा आरंभ होता है। सिंह रूपी स्वर्ण रथ में भगवान श्री मलयप्पस्वामी भक्त

जन समेत चार माड़ावीथियों में दर्शन देता है। सिंह शक्ति, साहस और रक्षण का संकेत है। यह नरसिंह स्वामी के भक्त जनों का परम आनंद यात्रा है। इस वाहन दर्शन भक्त जनों में शक्ति, साहस और आलसी तत्व को दूर करके उत्तेजित करता है।

मोतियों से सर्जित वाहन

रंग बिरंगी दीपालंकरण, मोतियों से अलंकृत वाहन में मलयप्पस्वामी श्रीदेवी, भूदेवी सहित चार माड़ावीथियों

में भक्त जनों को दर्शन देता है। मोती शुद्धता और भगवद्भक्ति को प्रेरित करता है। यह भक्ति और शांति का संगम है।

कल्पवृक्ष वाहन

मलयप्पस्वामी फूलों से सजाते कल्पवृक्ष जैसा वाहन में विराजित होकर जो शांति-समृद्धि को संकेत करता भक्त गण को दर्शन देता है। यह वाहन सेवा सुबह शुरू होता है। कल्पवृक्ष सभी कामनाओं को पूरी करता है। यही भी भक्त जन गोविंद नाम स्मरण करते अपने मनोकामनाओं की पूर्ती केलिए प्रार्थना करते हैं।

सर्वभूपाल वाहन

स्वामी अपने देवेरियों सहित स्वर्णाभरण युक्त में विराजमान था। विद्युत दीपों से यह मंडप स्वर्ण और रत्नों से अलंकृत है। यही वेंकटेश्वर स्वामी कालीय मर्दन (श्रीकृष्ण कालीय मर्दन करना) रूप में विराजते हैं। स्वामी

के चारों माड़ावीथियों में भक्तों को दर्शन देते हैं। यह विश्व विधि का संकेत है। सर्वभूपाल सभी राजाओं का राजा है। यहाँ भगवान के चरण स्पर्श हेतु अधिकारी, अनधिकारी और भक्त जन तड़पते हैं।

मोहिनी अवतार पालकी में

मोहिनी श्रीकृष्ण का स्त्री अवतार था। क्षीर सागर मंथन में अमृत को देव, दानवों में बांटते समय का अवतार था। अज्ञान पर ज्ञान का आविष्कार रूप ही मोहिनी है। भगवानजी स्त्री वस्त्र धारण में, रत्न सहित फूलों से सजाते, मंद हास करते दर्शन देता है। यह रूप दया, साहस और शक्ति का प्रतीक है। पालकी में यात्रा होती है। भक्त इसे दुष्टशक्ति, अहंकार पर विजय मानते हैं।

गरुड़ वाहन

यह भगवान विष्णु का वाहन है। शक्ति, शीघ्रता और मुक्ति प्रदाता माना जाता है। गरुड़ा संरक्षक है, दुष्टशक्ति

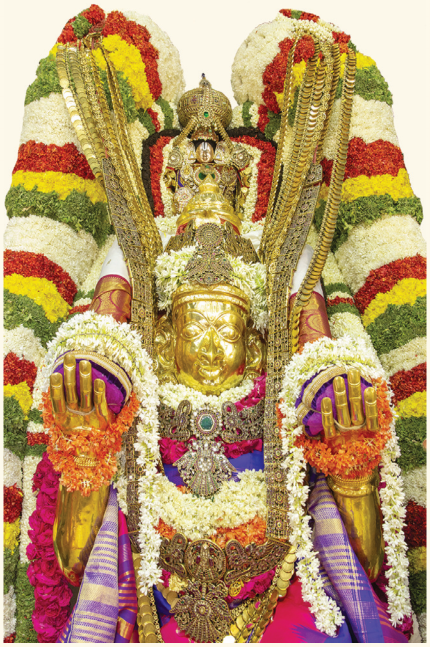

और नाग दोषों से। यह ब्रह्मोत्सव में मुख्य और विशिष्ट वाहन है। भगवान सुदर्शन चक्र और शंख से दर्शन देता है। भक्त जन दिव्य भक्ति सहित

आशीर्वाद मिलनेवाले आकांक्षा करते हैं। यह यात्रा भगवान विष्णु के दिव्य शक्तियों से भक्तजनों को रक्षण देता है। गरुड़ हमेशा भक्त जनों की सेवा में तत्पर है।

हनुमद्वाहन

ये दोनों हनुमद् और गजवाहन वेदमंत्र, संगीत और सांस्कृतिक कला रूपों से सजदज के साथ सेवा किया जाता है। हनुमा शक्ति, भक्ति और अभय का प्रतीक राम भक्त था। यह संदेश देता है कि भगवान पर जो समर्पण भाव से होते हैं (अपने आप को समर्पित करते हैं) उनको भगवान की कृपा अवश्य मिलेगा। वह विजय संकेत भी है, जैसे राम हनुमान की सहायता से रावण पर विजय पाया था। अर्चक गण भगवान और हनुमान को फूल, आभूषण, रेशमी वस्त्रों से अलंकार करते हैं। ताल, मेल, राग और वेद पारायण से जुलूस निकलता है। भक्तजन जय हनुमान बोलते, सुंदरकांड पारायण करते, जय नाद करते हैं।

गज वाहन

गज शक्ति, पवित्रता, राजदर्प का प्रतीक था। वाहन को सर्वालंकृत करते हैं। उस पर विष्णुभगवान विराजते हैं। वह इंद्र का ऐरावत माना जाता है। इस से गजेंद्र मोक्ष याद आता है, जिस में भगवान आर्त जनों का उद्धार करता है। वेद मंत्रोच्चार, दीपालंकरण से यात्रा जारी रहती है। भक्त जन भगवान से भक्ति, युक्ति, धन-संपत्ति वृद्धि और मुक्ति चाहते हैं।

सूर्यप्रभा वाहन

सूर्य शक्ति, कांति और जीवन दाता था। यहाँ भगवान विश्वात्मा प्रतीत होता है। इस वाहन में भगवान वेंकटेश्वर स्वामी विष्णु रूपी, सूर्य वाहन पर विराजते हैं भक्त जन गायत्री मंत्र को जपते (जो ज्ञान प्रचोदित हो) वाहन सेवा करते हैं। रथ सात अश्वों से (सप्ताश्व) सजाते हैं। सप्ताश्व सात रंगों का, सात चक्रों का, सात दिनों का प्रतीक है। भगवान स्वर्ण वस्त्रों में आभूषित प्रकाशमान होते हैं। अर्चक गण सूर्य स्तोत्र, विष्णु सहस्रनाम और वेद पारायण करते हैं। भक्तजन आरोग्य, संपत्ति, अंधे कर्मों से मुक्ति चाहते हैं।

चंद्रप्रभा वाहन

चंद्र के संकेत में वाहन (रथ) को चाँदी से मडते हैं। भगवान नक्षत्र युक्त आकाश के नीचे, शांत और ठंडी वातावरण में विराजते हैं। चंद्र का प्रभाव मन, मनोविकार और जीवन चक्र पर होता है। इस वाहन में विराजित भगवान भक्त जनों को मानसिक प्रशांति, विकारों को वश में रखने की शक्ति देता है। मन चंचल है, जैसा चंद्र कलाएँ। मन वश में रहे तो सब वश में होगा। चंद्रप्रभा वाहन में विराजित भगवान की कृपा से भक्तजनों का जीवन सफल होता है। भगवान को चाँदी और सफेद वस्त्रों से अलंकार करते हैं। अर्चक गण चंद्र गायत्री पढ़ते हैं।

रथोत्सवम

इसे रथ यात्रा भी कहते हैं। श्रीदेवी, भूदेवी सहित श्री वेंकटेश्वर स्वामी अष्टम दिन इस में विराजित है यह लकड़ी से बनाया वाहन है। भक्त समझते हैं कि रथ को खींचना पूर्व जन्म पुण्य है। इस दिन सुप्रभात सेवा, पुण्याहवाचन करते हैं। अर्चक गण स्नपन तिरुमंजनम (पुण्य स्नान) करते हैं। भक्त जन गोविंदा नारा लगाते, नारियल, पुष्प चढ़ाते, नादस्वरम, मृदंग जैसे मंगल वाद्य से यात्रा निकलता है। मंदिर के हाथी, अश्व और रक्षक गण सामूहिक यात्रा करते हैं।

अश्व वाहन

यह अश्व रूपी वाहन था। श्री वेंकटेश्वर स्वामी कल्कि अवतार में

दर्शन देता है जो विष्णु का दसवाँ अवतार था। यह धर्म स्थापना और दुष्ट शिक्षा का संकेत है। स्वामी युद्ध वीर जैसा अस्त्र शस्त्र धारण करता है। वाहन माड़ावीथियों में घूमते समय, बीच में रुकते समय, अर्चक गण अर्चना करते हैं और आरती (हारती) देते हैं। यात्रा कोलाटम, भजन, मंत्रोच्चारण से दिव्यानुभूति देता है। सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसा गीत-संगीत भक्ति विभोर होकर मनाया जाता है।

पालकी उत्सव

सर्वालंकृत पालकी में श्रीदेवी भूदेवी सहित श्री मलयप्पस्वामी दर्शन देता है। वेदमंत्र और नादस्वरम से उत्सव शुरू होता है। स्वामी इन सभी उत्सवों से (पूर्व दिनों के) वापस आता है। यहाँ भक्तजन को समीप दर्शन मिलता है।

तीर्थ वारी अवभृथ स्नान

इसे अवभृथ स्नान, चक्रस्नान भी कहते हैं। यह मध्याह्न होता है। यह भक्ति की पराकाष्ठा माना जाता है। चक्रस्नान स्वामिपुष्करिणी में होता है। स्वामी की सुदर्शन चक्र भक्ति गीत, वेद मंत्रोच्चारण से पुष्करिणी तक लाता है।

पुष्करिणी में चक्रस्नान से (चक्र स्पर्श से) जल पवित्र होता है। उसके बाद भक्त जन उस जल में स्नान कर, पुनीत होते मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

तिरुच्चि उत्सव

यह मंदिर साफ़ करने का उत्सव है। वास्तव में यह अपवित्रता से पवित्र होने का उत्सव है।

पवित्र जल, गाय ढंग, हल्दी और सुगंध से उत्सवमूर्ती, उत्सव वाहन, मंदिर, उसके चारों ओर शुद्धि किया जाता है।

ब्रह्मोत्सव का भव्य, दिव्य, मंगलप्रथ और मुक्ति दायक यात्रा (सेवा) सर्व मंगल प्रधायिनी है।

पानी का महत्व

- डॉ.के.एम.भवानी

पानी बचाओ - धरती बचाओ!

जल रक्षण - भविष्य का संरक्षण!!

जल ही जीवन है। भगवान की सृष्टि में पाँच तत्त्व हैं जिन्हें पंच भूत कहते हैं। वे हैं - पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश। इनमें जल अत्यंत महत्वपूर्ण है। मानव का शरीर भी पंचभूतात्मक है यानि पाँच भूतों से निर्मित है।

हमारे पुराणों के अनुसार सृष्टि का आरंभ जल प्रलयन के बाद हुआ। जल को नार भी कहते है। जल ही आवास होने के कारण विष्णु भगवान नारायण कहलाया गया है। सृष्टि का अंत भी जल प्रलयन से ही होगा। इसका अर्थ है अंत में सारी सृष्टि जल में ही लीन हो जाती है।

पानी के बिना जीवन असंभव है। नागरिकता का बढ़ते-बढ़ते लोग नदी के किनारे बसकर रहना सीख लिए। संचार जीवन खतम करके पानी का उपयोग करके खेतीबाड़ी करते हुए एक जगह पर स्थिर रहना सीख लिए, क्योंकि नदियों के किनारे बसने पर विकास और प्रगति की संभावना है। अगर हम परिशीलन करके देखेंगे तो हमें पता चलता है कि भारत देश में करीब हर छोटे या बड़े मंदिर के किनारे नदी या पुष्करिणी जरूर दिखती है। उदाहरण के लिए भूलोक कैलास कहा जानेवाला काशी नगर गंगा नदी के किनारे पर स्थित है। बदरी अलकनंदा नदी के किनारे, अयोध्या सरयू नदी के किनारे पर स्थित हैं।

ऋग्वेद में पानी के महत्व को इस प्रकार बताया गया है -

''आपोहिष्टा मयो भुवः तेना ऊर्जे ददा तना
मेहरणाय चक्षुसे''

अर्थात हे जल! तुम हमारी शक्ति हो।

तुम्हीं के कारण मानव इतना और सुख और शांति से जी रहा है।

मानव जीवन का आधार जल ही है। इसलिए जल को अमृत माना गया है। भोजन के बिना मानव कुछ दिन जिंदा रह सकता है लेकिन पानी के बिना एक दिन भी जिंदा रहना असंभव है। इसीलिए जल दान उत्तम दान माना जाता है। आज भी कोई मेहमान ही नहीं, अनजान भी घर आने पर पानी के साथ स्वागत करना भारतीय संस्कृति है। गर्मियों में जगह-जगह पर मिट्टी के घडों में पानी रख कर राहगीरों की प्यास बुझाना लोग पुण्य कार्य मानते हैं। इसीलिए प्राचीन काल से ही नदियों, कुओं का निर्माण करना हमारी संस्कृति का मुख्य अंग बन गया है।

वेदों के अनुसार हर काम करने के लिए जल का होना जरूरी है। हिन्दू धर्म में हर काम की शुरुआत जल से ही होता है। आध्यात्मिक पूजा, व्रत ही नहीं, दैनंदिन हर छोटे-बडे काम भी जल के आचमन से ही शुरू होता है। हर दिन प्रत्यक्ष भगवान सूर्य को जलांजलि देना हमारी भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है।

पाँच तत्वों से तैयार मानव शरीर को अंत में भस्म करने के बाद मानव के चिता भस्म और अस्थियों को जल में मिलाने का संस्कार आज भी हम भारतीय संस्कृति में देख सकते हैं।

इतना पवित्र जल को प्रदूषित करना, वृथा करना महापाप माना जाता है क्योंकि जल सहज सृष्टि से ही मिलता है इसे कोई तैयार नहीं कर सकते हैं।

ब्रह्मांड और स्कन्द पुराणों के अनुसार

परम पवित्र कलियुग वैकुंठ कहलानेवाला तिरुमल पहाड पर अनेक तीर्थ हैं जो मानवों को पाप मुक्त करने के साथ-साथ यात्रियों का प्यास बुझाते हैं। ये तीर्थ आकाश गंगा, पाप नाशनम, कुमार तीर्थ, राम-कृष्ण तीर्थ, वैकुंठ तीर्थ, चक्रतीर्थ, तुंबुरु तीर्थ, गोगर्भ तीर्थ, जापालि तीर्थ, नरसिंह पुष्करिणी आदि। हर तीर्थ की

अपनी-अपनी विशेषता और महत्त्व है। समय-समय पर तिरुमल तिरुपति देवस्थान के द्वारा इन तीर्थों के उत्सव बड़े पैमाने पर मनाया जाता है। इसलिए यात्रियों का कर्तव्य बनता है कि इन तीर्थों को गंदा न करके, तिरुमल पर्यटन के समय जल संरक्षण करें और भावी पीढ़ियों के लिए आदर्श प्रस्तुत करें।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान जल प्रसाद योजना के अंतर्गत तिरुमल के साथ-साथ अलिपिरि पैदल रास्ता, श्रीवारि मेट्टु पैदल रास्ता आदि में जगह-जगह पर मुफ्त पानी का प्रबंध किया है। यात्री लोग इसका सदुपयोग करें और पानी को व्यर्थ न बहाए। नल को कभी भी पानी बहता छोडना नहीं चाहिए। आज का हमारा हर छोटा प्रयास भी भावी पीढ़ियों के लिए बहुत बडा लाभदायक सिद्ध होगा।

जल दाता सुखी भव!

जल संरक्षक सुखी भव!!

तिरुमल के आस पास के प्रेक्षणीय स्थल

आंध्रप्रदेश राज्य के तिरुपति जिले के अन्तर्गत तिरुमल एक बड़ा पुण्य क्षेत्र है। तीर्थस्थान है। देश में सब से बड़ा धार्मिक स्थल भी है। कलियुग के प्रत्यक्ष भगवान श्री वेंकटेश्वर का क्षेत्र तिरुमल मन्दिर के इर्दगिर्द में अनेक प्रेक्षणीय स्थल विद्यमान हैं। सागर के स्तर से लगभग 2800 फुट की ऊँचाई पर स्थित अरण्य प्रदेश में तिरुमल एक अंतर्भाग प्रदेश के रूप में विराजमान है। तिरुमल के आवागमन हेतु दो घाट रोड् (रास्तें) विद्यमान हैं। दो प्रधान सोपान मार्ग भी हैं। तिरुमल एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ पर विशेष, विस्मयकारी प्रदेश विद्यमान हैं।

नारायणगिरि पर भगवान के चरण

नारायण ने वैकुंठ से आकर पृथ्वी पर अपने चरणों की जहाँ पर स्थापना की वहीं नारायणगिरि है। इस घटना के स्मारक के रूप में भगवान के दो चरण यहाँ पर विद्यमान हैं। भक्त आज भी इन चरणों की पूजा भक्तिभाव के साथ कर रहे हैं। नारायणगिरि एक अत्युन्नत पर्वत है। आषाढ़ शुद्ध एकादशी के दिवस पर यहाँ छत्र-स्थापनोत्सव का आयोजन किया जाता है। यह आयोजन वैभवपूर्ण होता है। इस अवसर पर बालाजी के चरणयुगल पर भूचक्र छत्र की स्थापना कर, अर्चक गण शास्त्रोक्त रीति से पूजन करते हैं। जिस प्रकार तिरुमल पर्वत के चरण तल के पास तिरुपति नगर बसा हुआ है, उसी तरह नारायणगिरि के चरणरूपी पीठ पर तिरुमल विराजमान है। तिरुमल के बस अड्डे से वहाँ तक जाने के लिए बसों की सुविधा उपलब्ध है।

शिलातोरण

तिरुमल से लेकर शेषाचल पर्वत शृंखला तक विद्यमान प्राचीनता के प्रतीक के रूप में शिलातोरण यहाँ पर विद्यमान है। यह एक प्राकृतिक भौगोलिक अद्वितीय चिह्न है। पुराणों के मुताबिक जब श्री वेंकटेश्वर का भूमि पर आगमन हुआ था, उस समय उन्होंने एक चरण नारायणगिरि के शिखर पर, दूसरा चरण शिलातोरण के पास रखा था। यह लोगों का कहना है। इस शिलातोरण को ही द्वार मानकर भगवान वेंकटेश्वर ने यहाँ से निकल कर मूल मंदिर तक पहुँचा होगा। यह बात इतिहास से स्पष्ट है। इस शिलातोरण की ऊँचाई 10 फुट है। चौड़ाई 25 फुट है। यह एक अपूर्वसृष्टि है। विस्मयकारी है। करोड़ों सालों से पहले यह प्रदेश समुद्र से ढ़का हुआ था। भूमि में हुए विभिन्न परिवर्तनों के फलस्वरूप यहाँ का समुद्र सूदूर चला गया। और प्राकृतिक रूप यह शिलातोरण बना। समुद्र दक्षिण दिशा की ओर चला गया।

चक्रतीर्थ

तिरुमल अनेक प्रकार के दिव्य तीर्थों का आवास है। अतः इस क्षेत्र को तीर्थाद्रि कहते हैं। पुराणों में 108 तीर्थों के बारे में उल्लेख हैं। उनमें भगवान के चक्रायुध के नाम से विख्यात चक्रतीर्थ अत्यंत पवित्र है। तिरुमल मंदिर से 3 कि.मी. दूरी पर वायव्य दिशा में शिलातोरण के निकट, एक घाटी में, यह दिव्यतीर्थ चक्रतीर्थ विद्यमान है। एक राक्षस ने पद्मनाभ नामक एक ब्राह्मण को निगलने की कोशिश की। तब उस भक्त की रक्षा के लिए, श्रीहरि ने सुदर्शनचक्र से, उस दैत्य का संहार किया। इस घटना के आधार के रूप में; एक बड़ी शिला पर सुदर्शन चक्रत्ताल्वार, प्रकट हुए। यहाँ पर श्री लक्ष्मीनृसिंहस्वामी भी विराजमान है। वृश्चिक माह में शुद्ध द्वादशी के दिन, स्वामी यहाँ पर विविध वाद्यों के शब्दों के बीच उपस्थित होते हैं। जुलूस निकलती है।

श्री अभय आंजनेय स्वामी का मंदिर

यहाँ पर मूलविग्रह कई सदियों से यद्यपि विराजमान है, तथापि स्थलीय भक्तों के सहयोग से नवीनरूप से श्री अभय आंजनेय स्वामी मंदिर का निर्माण किया गया। यह महिमान्वित मंदिर तिरुमल मंदिर की वायव्य दिशा में वेद पाठशाला के रास्ते में परम आह्लादकारी अरण्य में विराजमान है। यहाँ पर प्राकृतिक सौन्दर्य को देख सकते हैं। प्राचीन काल में तिरुमल की ओर जाने वाले पैदल रास्तों में भाकरापेट घाटी का रास्ता भी एक है। वहाँ से आनेवाले यात्रीगण प्रथमतया भाकरापेट के निकट विद्यमान बालवेंकटेश्वरस्वामी का दर्शन कर रात वहीं रूककर, प्रातःकाल में उठकर स्वामिकोना अरण्य मार्ग से निकलते हुए पुलिबोनु, टेंकाय नेट्टु प्रदेशों से गुजर कर तिरुमल तक पहुँचते थे। इस दौरान विजयनागर साम्राज्य के समय में यहाँ पर एक शिलामंडप का आविर्भाव हुआ था। इस मंडप की छत्र छाया में विद्यमान आंजनेय ही श्री अभयांजनेय स्वामी के नाम से पूजे जा रहे हैं। परंतु पुराना मार्ग अब लोगों के उपयोग में नहीं है। इस मंदिर के पास में अत्युन्नत स्तर पर विद्यमान नायनिचेरुवु भी एक प्रेक्षणीय स्थल हैं।

नागलबावि

स्थानीय लोग इसको नागुलबावि कहते हैं। इसका नाम नागतीर्थ है। यहाँ पर एक विशाल शिला पर नागदेवता की प्रतिमाओं को उत्कीर्ण किया गया है। समीप में एक सरोवर सुन्दर रूप से विराजमान है। आदिशेष के कारण इस प्रदेश का नाम शेषाचल बन गया। आदिशेष का रूप सर्प का प्रतीक है। नागचतुर्थी के अवसर पर विशेष पूजा पाठ का आयोजन होता है। तिरुमल मंदिर के समीप में विद्यमान अतिथि गृहों को पार कर रास्ता पार कर बाटगंगम्मा मंदिर पहुँचकर, वहाँ से आगे बढ़कर बाई तरफ घूमने से नागतीर्थ पहुँच सकते हैं।

नक्षत्रवन

जन्मकुंडली के अनुसार नक्षत्र 27 हैं। एक एक नक्षत्र के लिए एक एक वृक्ष प्रतीक के रूप में विद्यमान है। 27 नक्षत्रों के प्रतिनिधित्व करते हुए 27 वृक्षों का यहाँ इंतजाम किया गया है। सभी वृक्षों को नक्षत्र के आकार में यहाँ पर स्थापित किया गया है। यही नक्षत्रवन कहलाता है। तिरुमल तिरुपति मंदिर के अरण्य विभाग ने इस वन का निर्माण किया। तिरुमल में पापविनाश के मार्ग में पारुवेट मंडप के पास यह वन विराजमान है। संक्रांति के सिलसिले में मृगया विनोद (षिकार) के लिए पधारने वाले श्री मलयप्पस्वामी के लिए निर्मित मंडप ही पारुवेट मंडप के नाम से विख्यात है। हाल ही में इस मंडप का पुनर्निर्माण किया गया। परम रमणीय प्राकृतिक सौन्दर्य के बीच नयनमनोहर नक्षत्रवन के साथ पारुवेट मंडप का भी भक्त दर्शन कर सकते हैं।

काल्तेरु

'कल्' शब्द का अर्थ तमिल भाषा में पत्थर है। 'तेरु' का मतलब रथ। अर्थात् शिला से निर्मित रथ। श्री वेंकटेश्वर के भोग रथ के नाम से विख्यात ब्रह्मरथ, लकड़ी का रथ के बारे में भक्तों को जानकारी उपलब्ध है। किन्तु उनको शिलारथ की जानकारी नहीं है। तिरुमल टी.बी.गार्डेन्स में श्रीवारिमेट्टु पैदल रास्ते के माध्यम से तिरुमल में प्रवेश करनेवाले लोगों को शिला निर्मित सुदृढ़ रथ का दर्शन संप्राप्त होता है। वास्तव में यह शिलानिर्मित रथ बड़े-बड़े चक्रों के साथ तिरुमल में उत्तर, पूर्व माड़ावीथियों के संगम स्थल पर धीर, गंभीर रूप में खड़ा होकर दर्शन देता है। इस सुमनोहर सुंदर शिल्प विद्यमान है। भक्तों की सुविधा के लिए माड़ावीथि के मार्ग का विस्तृतीकरण करते समय, तिरुमल तिरुपति मंदिर के अधिकारियों ने इस शिला निर्मित रथ को, यहाँ से निकाल दिया। किंतु इस रथ के वजनदार पहिया जमीन में फस चुके है। उन चक्रों को उठाना आज तक संभव नहीं है। विजयनगर साम्राज्य के चक्रवर्ती श्रीकृष्णदेवरायलु अच्युतदेवरायलु के आंतरंगिक अधिकारी यल्लप्पा नायकर् इस शिला रथ के निर्माता थे। उसने शालिवाहन शक 1527 में इस शिला रथ को निर्मित कर तिरुमल में स्थापित किया।

क्षेत्रपालक की वृत्ताकार शिला

रुद्र, तिरुमल के क्षेत्रपालक है। प्राचीन काल में बालाजी के मंदिर में क्षेत्रपालक के नाम से एक बड़ा पत्थर था। रात्रि काल में यह शिला वृत्ताकार घूमता हुआ, इस प्रदेश की रक्षा किया करता था। एक दिन अचानक इस शिला के नीचे आकर, एक बालक की मृत्यु हो गई। तब से इस वृत्ताकार शिला को मंदिर से दूर गोगर्भतीर्थ के पास, रख दिया। शिवरात्रि के पावन अवसर पर, इस शिला की पूजा, अभिषेक इत्यादि कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। तिरुमल मंदिर की ईशान्य दिशा में एक कि.मी. दूरी पर विद्यमान गोगर्भतीर्थ, पांडवतीर्थ भी प्रेक्षणीय स्थल हैं।

हाथीरामजी मठ

बालाजी मंदिर की आग्नेय कोण में अत्यधिक ऊँचाई पर एक राजभवन जैसा सुंदर, बड़ा भवन है, इसीको 'हाथीरामजी मठ' कहते हैं। इस मठ के मूलपुरुष हाथीरामजी बाबाजी। भगवान के परम भक्त थे। बाबाजी खुद नित्य श्री वेंकटेश्वर के साथ पासा खेला करते थे। ऐसा लोगों का मानना है। उस समय अंग्रेजी शासकों ने तिरुमल मंदिर एवं अन्य अनुबंध मंदिरों की जिम्मेदारी को हाथीरामजी मठ के महंतों को सौंप दिया। सन् 1933 तक तिरुमल तिरुपति मंदिरों की जिम्मेदारी को मठ के महंतों ने निभाया। उनके नेतृत्व में भक्तों की सुविधा के लिए अनेक योजनाओं का, सेवाओं का शुभारंभ किया गया था। यह मठ निर्माणात्मक दृष्टिकोण से देखा जाय तो अत्यंत रमणीय है। मठ में महन्तों का सिंहासन या पीठ, हाथीरामजी के साथ वेंकटेश्वर पासा खेलने का प्रदेश इत्यादि प्रेक्षणीय स्थल है। यहाँ पर, कृष्ण मंदिर, दशावतार, हनुमान की मूर्ति भी प्रेक्षणीय है।

अनंताल्वार का उद्यान

तिरुमल मंदिर के नैऋति दिशा में विद्यमान अनंताल्वार फूलों का उद्यान वन अत्यंत रमणीय है। यह एक महाभक्त की गाथा का प्रतीक है। वैष्णव साहित्य की परिभाषा में श्रीरंगं, विष्णुकांची भोग, त्यागमंडप हैं। तिरुमल पुष्पमंडप है। तिरुमल में सर्वप्रथम पुष्पसेवा का शुभारंभ किया था तिरुमल नंबी ने। उस सदाचार का अनुसरण करने वाला महानुभाव अनंताल्वार। भगवान के ब्रह्मोत्सवों के आखरी दिन ध्वजारोहण के उपरांत, दूसरे दिन बाग सवारी महोत्सव का आयोजन धूमधाम से चलता है। 'बाग' माने उद्यान वन। मलयप्पस्वामी श्रीदेवी, भूदेवी-दोनों से परिवेष्टित होकर, अनंताल्वार उद्यानवन में प्रवेश करते हैं। इसका नाम पुरिशैवारि उद्यान है। अनंताल्वार के बृन्दावन में उत्पन्न वकुलवृक्ष की पूजा होती है। अनंताल्वार सरोवर के लिए खुदाई कर रहा था। उसकी मदद के भगवान वेंकटेश्वर एक बालक रूप में आजाते हैं। क्रोधित अनन्ताल्वान ने उस बालक पर कुदाल से प्रहार किया। उस बालक ठुड्डी पर चोट लगा। खून बेहने लगा। तुरंत बालक रूपी भगवान गर्भगृह में प्रवेश कर अंतर्धान हो जाते हैं। उस समय अपसव्य रूप से मंदिर की परिक्रमा हो जाती है। बाग सवारी उत्सव में यही एक आचार बन गाया। लोगों में भक्ति, विश्वास एवं उत्सुकता होनी चाहिए। तिरुमल के आस पास में प्रेक्षणीय स्थलों की कोई कमी नहीं है। शंकुतीर्थं, तरिगोंडा वेंगमांबा बृन्दावन, जाबालि तीर्थं, आकाशगंगा, पापविनाशन तीर्थं, जल बांध, शिलातोरण के पास राक् गार्डेन,... इस प्रकार ढ़ेर सारे पुराण, इतिहास प्रसिद्ध प्रदेश तिरुमल में विद्यमान है। स्वामी के लीलाओं की कथाएँ, महिमा की गाथाएँ, जानपद किंवदन्तियाँ, ढ़ेर सारे उपलब्ध हैं। इस प्रकार का साहित्य भक्त-जनों को तिरुमल की और आकर्षित कर रहा है।

तेलुगु मूल - श्री बी.वी.रमणा   अनुवादक - डॉ.के.सुधाकर राव

दि.16-07-2025 को तिरुमल में 'आणिवर आस्थान' के अवसर पर तमिलनाडु, श्रीरंगं श्रीरंगनाथ स्वामीजी की ओर से पवित्र रेशमीवस्त्र तिरुमल भगवानजी को समर्पित किया। तिरुमल, श्रीश्रीश्री बडाजीयर मठ में इस तोफा को विशेष पूजाएँ आयोजित किया। तदनंतर माड़ावीथियों में प्रदक्षिण अनंतर श्रीश्रीश्री बडाजीयर, श्रीश्रीश्री छोटाजीयर, ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष, ति.ति.दे. का ई.ओ., तमिलनाडु राज्य के धर्मस्व शाखा के सचिव जी ने भगवान जी को रेशमी वस्त्रों को समर्पित किया।

मैसूर महाराज के जन्म दिवस के अवसर पर तिरुमल में सांप्रदायिक पल्लवोत्सव कार्यक्रम को दि.21-07-2025 को संपन्न किया। श्रीदेवी भूदेवी सहित श्री मलयप्पस्वामी जुलूस में कर्णाटक धर्मशाला को पहुँच गयी। इस संदर्भ में मैसूर संस्थान के प्रतिनिधि, कर्णाटक सरकार की ओर से उपस्थित प्रतिनिधि ने भगवान जी को आह्वान करके आरती देकर विशेष पूजाएँ संपन्न किया।

भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री एम.वेंकय्या नायडू जी ने अपने परिवार के साथ दि.28-07-2025 को तिरुमल भगवान जी को दर्शन किया। इस संदर्भ में पंडितों ने वेदाशिर्वचन दिया। और ति.ति.दे. के अतिरिक्त ई.ओ. जी ने इस संदर्भ में तीर्थ-प्रसाद को समर्पित किया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे.न्यास-मंडली के सदस्य और ति.ति.दे. के अन्य अधिकारियों ने भाग लिया।

हाल ही में तिरुमल अन्नमय्या भवन के सामने स्थित नूतन श्रीवाणी दर्शन टिकट केंद्र को उद्घाटन करते हुए ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष और ति.ति.दे. का ई.ओ.। इस संदर्भ में ति.ति.दे. न्यास-मंडली के सदस्य, ति.ति.दे. के अतिरिक्त ई.ओ. और अन्य अधिकारिगण ने भाग लिया।

दि.28-07-2025 को ति.ति.दे. और एच.डी.पी.पी. के संयुक्त आध्वर्य में 'सद्गमया' नामक प्रशिक्षण कार्यक्रम को ति.ति.दे. के द्वारा आयोजित तिरुमल और तिरुपति में स्थित ति.ति.दे. पाठशालाएँ में प्रारंभित किया। तिरुपति में स्थित एस.जी.एस.पाठशाला में यह कार्यक्रम को प्रारंभोत्सव किया। इस संदर्भ में डी.पी.पी. के सचिव, डी.ई.ओ. और अन्य अधिकारिगण ने भाग लिया।

जननी जयरूपिणी

- श्री वी राजमौलि

''दसरा'' को संस्कृत में ''दशहरा'' कहते हैं। अर्थात् दस जन्मों के तथा दस तरीकों के पापों का नाश करने वाला है। इसी देवी के उत्सवों को दसरा-उत्सवों के रूप में देशभर में अत्यन्त उत्साह के साथ मनाते हैं। आश्वयुज शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नौ दिनों तक मनाये जाने वाले इस उत्सवों को ''शरन्नवरात्रि उत्सव'' के रूप में व्यवहृत करते हैं। शरत काल में उद्भूत ''माँ शारदा'' पूजाएँ स्वीकार करके कृपा-दृष्टि प्रसारित करती है।

चैत्रमास से लेकर भाद्रपद मासांत तक के काल को पूर्वार्धकाल कहते हैं। यह पुरुषात्मक है। इसलिए इस ऋतु को ''वसंत'' कहकर पुल्लिंग में व्यवहृत करते हैं। आश्वयुज से लेकर फाल्गुण मासान्त तक के छः मासों का काल स्त्री रूपात्मक है। इस काल में ''स्त्री'' को अर्चना करनी चाहिए। इसलिए श्री महाविष्णु की बहन ''नारायणी'' की पूजा की जाती है। वही ''दुर्गा'' नाम से पुकारी जाने वाली ''पार्वती'' है। प्रकृति भी स्त्री-रूप ही है। ''प्र'' का अर्थ ''सत्व गुण'' है। ''कृ'' माने ''रजो गुण'' है तथा ''ति'' माने ''तमो गुण'' है। इस तरह प्रकृति-माता त्रिगुणात्मिका है।

वेदों ने देवी नवरात्रों को ''अंबायज्ञ'' कहा तो पुराणों ने ''नवरात्र-व्रत'' कहा। नवरात्रों में प्रथम तीन दिन दुर्गा-माता, मध्य में तीन दिन लक्ष्मी देवी तथा आखरी तीन दिन सरस्वती-माता की पूजा करना हमारा संप्रदाय है। दुर्गा की पूजा करने से हमारे अंदर निहित अरिषड्वर्ग दूर होते हैं। ये फिर हम में प्रवेश न करने हेतु लक्ष्मी देवी की पूजा करने से सकल सुगुण संपत्ति हमारे वश में होती है। उस संपत्ति द्वारा प्राप्त होने वाले दर्प को दूर भगाने सरस्वती-माता की पूजा करने से विवेक, भला-बुरा जानने का ज्ञान प्राप्त होते हैं। इस प्रकार तीन तरह की आराधनाओं की पूर्ति करके मुक्ति प्राप्त करना ही ''विजय दशमी'' की विशिष्टता है।

नव शक्तियों की पूजा

देवी नवरात्रों में प्रधान रूप से शक्ति की पूजा संपन्न होती है। इन नव रात्रों की पूजाओं को सात्विक, राजस, तामस नामक तीन वर्गों में हिन्दू संप्रदाय ने विभाजित किया। ज्ञानमयी देवी सरस्वती के रूप में आराधना करने का विधान मोक्ष प्रदान करने वाला सात्विक विधान है। महाकाली की आराधना करना, लक्ष्यसिद्धि प्रदान करने वाला तामस-विधान है। महालक्ष्मी, दुर्गा, ललिता जैसी देवियों की आराधना करना राजस है। इसका प्रयोजन कार्य-सिद्धि है। योगी, साधक आदि-मोक्ष-साधना के लिए सात्त्विक पूजा का ही आचरण करते हैं।

महिषासुर मर्दिनी

नवरात्रों के पश्चात् विजय के प्रतीक मनाया जानेवाला त्यौहार "विजय दशमी" है। यह, बहुत विशेषता प्राप्त दिन है। यह दुर्गामाता का बहुत प्रिय दिन है। "दुर्गा" का अर्थ दुर्गतियों का नाश करने वाला है। कइयों राक्षसों ने, कइयों रूपों में तरह-तरह के आयुध लेकर अपने ऊपर आक्रमण किया तो, विविध प्रकार के आयुध धारण करके सबका नाश किया दुर्गा ने। विजयदशमी के दिन ही लोक-कंटक महिषासुर का मर्दन करके "महिषासुरमर्दिनी" के रूप में कीर्ति पायी दुर्गा ने। अज्ञान, अविवेक, दुर्गुणों का समाहार वह राक्षस। ब्रह्म के वर-प्रभाव से पैदा होने वाली स्त्री के हाथों ही उसका वध हो; ऐसा वर उसने पाया था। इसलिए उसके दुराचारों की सीमा न रही। देवता लोग उसे निरोध कर न सके। वे खूब ऊब गये। अन्त में उनमें उत्पन्न क्रोध-रूपी स्फुलिंग एक पर्वत में बदल गया। उस पर्वत में से अठारह(18) हाथों वाली एक कन्या का आविर्भाव हुआ। वही लोक-

पावनी दुर्गा माता है। कितना ही बड़ा दैव क्यों न हो, कभी-कभी राक्षसों का वध करने में उनकी शक्ति काफी नहीं होती क्यों कि राक्षस लोग भी तपोबल वाले ही हैं।

महिषासुर का अंत करने अवतरित दुर्गा माता को सारे देवताओं ने अपने-अपने आयुध-सौंप दिये। परम शिव से त्रिशूल, विष्णु से सुदर्शन चक्र, वरुण से शंख, अग्नि से भाला, सूर्य से गदा, विश्वकर्मा से कुल्हाड़ी प्राप्त करके हिमवंत के दिये सिंह पर आरूढ़ होकर महिष से युद्ध करने निकली। उस युद्ध में दुर्गादेवी ने महिष के साथ-साथ उसके सहचर रक्तबीज, शुंभ, निशुंभ का भी वध किया। यहाँ हम यह ग्रहण कर सकते हैं कि समिष्ट बल, एकल द्वारा चाहे कितना भी मुश्किल काम क्यों न हो, आसानी से पूरा कर सकते हैं।

हमारे देश के ग्रामीण-नागरिक; अमीर-गरीब; स्त्री-पुरुष; सभी भक्ति व श्रद्धा के साथ दुर्गा माई की पूजा संपन्न करते हैं। विवाह से पहले, प्रत्येक तेलुगु वधू गौरी-पूजा अवश्य संपन्न करती है। यह हमारा परंपरागत संप्रदाय है। कहते हैं कि उस जमाने में रुक्मिणी देवी ने श्रीकृष्ण को अपना पति पाने ऐसी प्रार्थना की कि, "नम्मिति मनंबुन सनातनुलैन उमा-महेषुलन, हरिनि पतिग सेयुमम्मा" (हरि याने श्रीकृष्ण को अपने पति बनाने मन में सनातन दैव उमा-महेश्वर पर भरोसा रखा)।

राम की विजय

"विजय दशमी" त्योहार से राम को भी संबंध है। त्रेतायुग में इसी दिन श्रीराम चंद्र ने अपनी पत्नी सीता देवी को अपहरण करने वाला रावणासुर का संहार किया। उसी प्रकार द्वापरयुग में पांडवों ने बारह वर्ष वनवास के पश्चात् एक वर्ष विराट राज के आस्थान में अज्ञातवास पूरा कर लिया। विजयदशमी के दिन ही अपना अज्ञातवास छोड़कर शमीवृक्ष पर छिपाये हुए अपने आयुध-धारण करके विराटराज

की पशु संपदा का अपहरण करने आनेवाले कौरवों का सामना करके मार भगाया।

तब से बुराई पर अच्छाई सदा विजय हासिल होने के विश्वास से विजयदशमी का त्यौहार मना रहे हैं। उत्तर भारत में लोग दुर्गा-माता के साथ-साथ रावण पर राम की विजय को प्राधान्यता देते हैं। विजयदशमी के दिन रावणासुर, कुंभकर्ण, मेघनाथ की प्रतिमाओं को विशाल रामलीला मैदान में जलाते हैं। उन प्रतिमाओं में पटाखे भर देते हैं। बंगाल में दशहरा बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। नवरात्रों के पश्चात् दुर्गामाता की शोभायात्रा संपन्न करके समीप की नदी में निमज्ञित करते हैं। नये कपड़े पहन कर दुर्गा की पूजा संपन्न करके सारे बंगला-वासी हर्ष व उल्लास के साथ त्यौहार मनाते हैं। उड़ीसा में भी लोग दुर्गा माता की नौ दिनों तक पूजा करके विजयदशमी के दिन निमज्ञन करते हैं। महाराष्ट्र में विजयदशमी के दिन शमीवृक्ष को पूजा करते हैं। उसके पत्तों को सोने के पत्ते मानकर एक-दूसरे को आदान-प्रदान कर लेते हैं। सगे-संबंधियों व मित्रों से मिलकर मिठाइयाँ बाँट लेते हैं।

पुतलों का आस्थान

दक्षिण भारत में साल भर में सबसे बड़ा त्यौहार दसरा (विजय दशमी) है। तमिलनाडु में दुर्गा, लक्ष्मी व सरस्वती की पूजा संपन्न करते हैं। तमिलनाडु तथा आंध्रप्रदेश में पुतलों के आस्थान का निर्वहण करते हैं। मैसूर के दसरा-उत्सवों का वर्णन तो किया ही नहीं जाता; देखते ही बनता है। मैसूर के राजमहल को खूब सजाते हैं। उस दिन राज-परिवार के निर्वहण में हौदों से सजाये गये हाथियों की शोभायात्रा देखने लायक होती है। हमारे राज्य में भी दशहरा बड़ा त्यौहार है। सभी त्यौहारों में से यह एक विशिष्ट त्यौहार है। परिवार के सारे लोग नये कपड़े पहन कर तरह-तरह के पकवान तैयार करके भोज का आयोजन कर लेते हैं। अपने बेटियों और दामादों को आमंत्रित करके नूतन वस्त्र भेंट करते हैं। सारे घर में खूब हलचल मचा रहता है।

इससे पहले के दिन ही बतुकम्मा

तेलंगाना प्रांत में दुर्गाष्टमी के दिन ''बतुकम्मा'' त्यौहार को बडी धूम-धाम से मनाते हैं। उसी दिन आयुध-पूजा भी संपन्न की जाती है। प्रत्येक घर में, प्रत्येक कारखाने में, कार्यालय में, प्रतिदिन उपयोग में लायी जानेवाली चीजों को, यंत्रों को, वाहनों को साफ करके सजाकर पूजा करते हैं। पटाखों से भरकर रावण का भारी पुतला तैयार करके, बुराई पर अच्छाई के संकेत में जलाते हैं। शमी वृक्ष की पूजा करके पाल पिट्टा (नीलकंठ पक्षी) को देखने पर शुभ-फल प्राप्त होंगे; ऐसा लोगों का विश्वास है। शमी वृक्ष के पत्तों को, सोने के पत्ते मानकर, बडों को भेंट करके उनके आशीर्वाद प्राप्त करते हैं; यह आचार पुराने जमाने से चला आ रहा है।

ॐ दुर्गायै नमः।

तिरुमल के वनों की रक्षा और पूजा करना

मूल लेखक - श्री अत्ति रंगराजन   अनुवादक - श्रीमती निशा सतीश

कुंडल के आकार में पडी पहाडियों का समूह जिसे तिरुमल की पहाडियाँ कहते हैं। इसकी दक्षिण भारत में विशेष महत्व/विशेषता होती है।

13 और 14 डिग्री उत्तरी अक्षांश और पूर्वी देशांतर 79 डिग्री के बीच।

प्रत्येक सात पहाडियों के दिव्य नाम हैं जिसकी जड़ें हिन्दु पौराणिक कथाओं में पाई जाती है, जैसे-वृषाद्रि, वृषभाद्रि, नारायनाद्रि, गरुडाद्रि, अजंनाद्रि, नीलाद्रि और वेंकटाद्रि।

वनों की पुष्प रचना शुष्क मिश्रित पर्णपाती से भिन्न होती है, पर्णपाती से काँटेदार झाडी। कभी-कभी सुखे सदाबहार विकास के पैच के साथ। माना जाता है कि इस क्षेत्र में जलवायु चरम पर पहुँच गई है।

हिंदु पौराणिक कथाओं के अनुसार वनों को पवित्र दृष्टि से देखा जाता है। हर काल्पनिक कहानी हिन्दु साहित्य से जुडी हुई होती है, वनों से गहरा रिश्ता होता है।

समृद्ध वनस्पति और जीव जन्तु और जैव-विविधता वनों में और पवित्र ग्रन्थों को एक दूसरे से जुडने के लिए यह जानबूझकर किया गया प्रयास प्रतीत होता है।

स्नेह और जुडाव पैदा करके वनों को बचाया जा सके या भय की भावना भी।

तिरुमल की पहाडियाँ जैव-विविधता की गहराइयों में बसा हुआ है। समृद्ध-श्री वेंकटेश्वरा राष्ट्रीय उद्यान और वन्य जीव अभयारण्य शेषाचलम की पहाडियों में पूर्वी घाट में लगभग 52,000 हेक्टेयर में फैला हुआ है।

यह न केवल जैव-विविधता के तप्त स्थल/उष्ण स्थल हैं परन्तु भगवान वेंकटेश्वर से संबंधित साहित्य से जुडी दिव्य भूमि है।

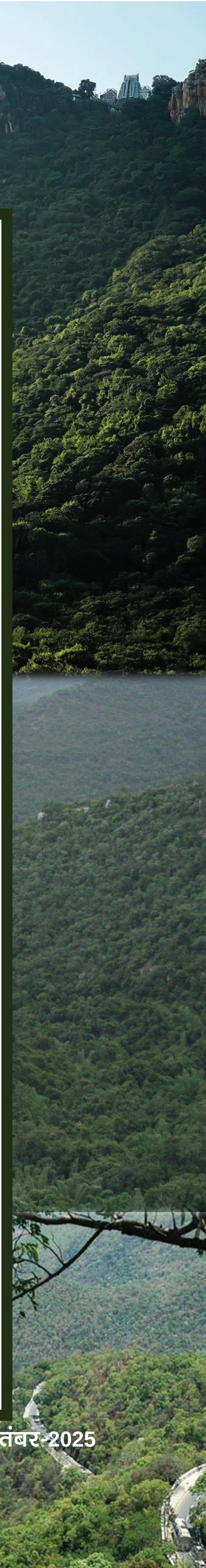

इस संरक्षित परिस्थितिकी तन्त्र के भीतर, तिरुमल तिरुपति देवस्थान(टी.टी.डी.) के अभिरक्षक श्री वेंकटेश्वर मंदिर, तिरुमल संलग्न क्षेत्र 27 वर्ग कि.मी. का प्रबंधन करते हैं।

नवीनतम आई.एस.एफ.आर. भारत वन स्थिति रिपोर्ट के अनुसार भारतीय वन सर्वेक्षण एफ.एस.आई. जो 24.4 टी.टी.डी. का 27 वर्ग कि.मी. को बनाये रखा - लगभग 90% को वन भाग में वगीकृत किया है। इसमें 889 हैक्टेयर मध्यम सधन वन और 1,540 हेक्टेयर से ज्यादा खुला वन शामिल है। क्षेत्र की परिस्थिति समृद्धि और अक्षुण्ण हरित आवरण को दर्शाता है।

तिरुमल के वनों की समृद्धि इससे भी आगे जाती है जिसने हरियाली को अच्छी तरह से बनाये रखा। ज्यादातर घने जंगल अभेद्य हैं और मानवीय हस्तक्षेप के लिए पवित्र माना जाता है।

''तीर्थम'' नामक सैंकडों पूजनीय जल स्थल शेषाचलम की पर्वत श्रृंखलाओं में पाए जाते हैं जिसका बहुत धार्मिक महत्व होता है।

वर्ष में एक विशिष्ट समय अवधि के दौरान श्रद्धालु/ भक्तगण इन स्थानों पर आते हैं जैसे - जब वहाँ ''तीर्थम'' विशिष्ट उत्सव मनाया जाता है।

भक्तों को पैदल यात्रा करने की अनुमति होती है। इस तरह से टी.टी.डी. वन विभाग तीर्थम की सदियों पुरानी विरासत की निरन्तरता को सुनिश्चित नहीं करता है बल्कि मानव के पैरों की निशाने से होने वाले नुकसान से वन की भी सुरक्षा निश्चित करता है।

दुर्लभ वनस्पति

तिरुमल के वन सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण पौधों की प्रजातियों से सम्पन्न है जो 'शेषाचलम' क्षेत्र के लिए गौरव का विषय है।

लाल चंदन एक प्रकार का वृक्ष जो अत्यधिक महत्वपूर्ण और तिरुमल के वनों में सबसे ज्यादा पाया जाता है।

यह स्थानिक विविधता दुनिया में और कहीं नहीं केवल शेषाचलम के क्षेत्रों में ही पाई जाती है।

इसे तेलुगु भाषा में 'येरा-चंदनम'(लाल चंदन) कहा जाता है जैसा कि नाम से ही विदित होता है कि चन्दन के पेड का तना मोटा और रंग लाल होता है। इस पेड़ का उपयोग हम मंदिर के रथ और अन्य लकडी से बनी चीजों के लिए करते हैं। यह संरक्षित वृक्ष की प्रजातियाँ हैं और इसलिए इन में अनियंत्रित कटाई नहीं कर सकते हैं।

एक और चन्दन का पेड जिसे तेलुगु भाषा में 'श्री गन्धम' कहा जाता है। यह दिव्य सुगन्ध से भरपूर होता है और इस वजह से पवित्र और भक्ति का प्रतीक माना जाता है। चन्दन का लेप मंदिर के कामों में नित्य उपयोग लिया जाता है जैसे- भगवान की प्रतिमा का 'अभिषेक' करने के लिए, प्रतिमा को नित्य दिव्य स्नान कराया जाता है। इसके नियमित उपयोग और दुर्लभता को

अक्तूबर 2025

01 महानवमी

02 विजयदशमी, गांधी जयंती

16-19 श्रीनिवासमंगापुरम्
श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी का पवित्रोत्सव

20 नरक चतुर्दशी, दीपावली,
तिरुमल में दीपावली आस्थान

21 श्री केदारगौरीव्रत

25 नागुलचविति

29-30 तिरुमल श्री बालाजी का पुष्पयाग

देखते हुए टी.टी.डी. ने इसके अधिकार क्षेत्र में 100 हक्टेयर से अधिक क्षेत्र में चन्दन की खेती शुरू की।

सइकस बेडडोमैयी या सगो पाम-यह दुर्लभ लुप्तप्राय और प्रागैतिहासिक पौधा है जिसे वनस्पति अवशेष भी माता जाता है। यह बड़े पैमाने पर स्थानीय मंदिरों में पवित्र प्रसाद की तरह उपयोग किया जाता है।

कारक्काया(हरीतकी) को आयुर्वेदिक चिकित्सा की धारा को उच्च संदर्भ में लिया जाता है और पारम्परिक औषधि तैयार करने में अत्यधिक पसन्द किया जाने वाला पौधा माना गया है। मुख्य बात है कि- शुद्धिकरण के लिए किए जाने वाले अनुष्ठानों में इस पौधे का उपयोग किया जाता है।

उसी प्रकार टर्मिनलिया बेलिरिका (बहेड़ा) को तेलुगु भाषा में 'थनी' कहते हैं। फिलैंन्यस एम्लिका को तेलुगु भाषा में 'उसिरि' कहते हैं। इन सभी को 'त्रिफला' माना गया है जिसका आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण में इसका बहुत महत्व है।

यह सूजी टी.टी.डी. के वनों की न केवल पौधों की प्रचुरता और विविधता बतलाती है। अपितु विभिन्न मंदिरों के परम्पराओं के साथ उनके जटिल संबन्धों को भी दर्शाती है। टी.टी.डी. हर तरह से वन की सुरक्षा का ध्यान रखता है ताकि पौधों को स्थायी बनाया जा सके जिनका मंदिर के कार्य-कलापों में विशेष उद्धेश्य होता है। कई पेड हिन्दु देवताओं के समूह में देवताओं से जुडे हुये होते हैं।

उदाहरण के तौर पर (रावि) 'पीपल' - 'अश्वत्थ' को भगवान विष्णु का अवतार, 'नीम' को देवी दुर्गा माँ से संबंधित बताया है, 'बिल्व' शिव भगवान को, 'वट वृक्ष' को ब्रह्म देव, (उसिरि) 'आँवला' को श्री लक्ष्मी देवी, पवित्र 'तुलसी' श्री विष्णु भगवान को अति प्रिय है।

'जम्मी' - 'शमीवृक्ष' शनि भगवान को पसन्द है। सभी दोषों का निवारण शमी पेड को पूजने से हो जाते हैं। अत्ति ('फिग') 'अंजीर' का पेड इष्ट देव कांचीपुरम के वरदराज भगवान से संबंधित है।

समृद्ध जीव जन्तु

जंगल में घूमते जीव-जन्तु का कुछ कम महत्व नहीं है अगर पुष्प विविधता से तुलना की जाए। जीव-जन्तुओं को देवताओं का दिव्य साथी हिन्दु पौराणिक कथाओं में माना जाता है।

हर हिन्दु देवता जीव-जन्तु से जुडे हुये होते हैं। यह सार रूप में है। इसका अर्थ ने केवल उनका सम्मान करना है बल्कि प्रजातियों को मानवीय आक्रमण से बचाना है।

भारतीय 'तेंदुआ' जो तेलुगु भाषा में 'चिरतापुली' नाम से जाना जाता है। इसे जंगल का संरक्षक माना गया है। इस जन्तु की व्यापक उपस्थिति छोटे शिकारियों के आक्रमण को हतोत्साहित करता है। माँ दुर्गा को इसी पर चढ़कर सवारी करते हुये पुराणों में देखा है।

‘सुस्त भालू’ (इलुगुबन्टू तेलुगु भाषा में) ज्यादातर शेषाचलम की पहाडियों पर पाये जाते हैं। इनका हिन्दु पुराणों में विशेष महत्व होता है। चित्रीदार हिरण (‘चिन्न जिंक्का’ तेलुगु भाषा) सांभर हिरण (‘पेद्दा-जिंक्का’ तेलुगु भाषा) ये सभी भगवान श्री विष्णु के पवित्र उपवनों के निवासी हैं।

‘बालु पामु’ तेलुगु भाषा में ‘देवांग पिल्ली’ ये शर्मीले, डरपोक और रहस्यमय जीव होते हैं जो पवित्र पहाडी क्षेत्र में निवास करते हैं। ये मासुमियत और सहनशीलता का प्रतीक माने जाते हैं। पतला लोरिस/Slender लोरिस/पतला बन्दर पतला बंदर अंजीर के पेडों के निकट पाया जाता है।

राविवृक्ष-अश्वत्थ भगवान के लिए यह पवित्र माना गया है।

पुनुगु पिल्ली (तेलुगु भाषा) सिवेट बिल्ली (या) कस्तूरी बिल्ली - यह पुनुगु का स्रोत है, पारम्परिक खुशबु वाली वस्तु जो भगवान वेंकटेश्वर को नित्य पूजा/आराधना में अर्पित किया जाता है और पवित्र इत्र के रूप में संरक्षित किया जाता है। यह भी इसी वन में पाया जाता है।

अन्तिम लेकिन कम नहीं, एशियाई हाथी जो इस क्षेत्र के पूर्वी घाट में पाए जाते हैं, जो हाथी गलियारे का प्रतिनिधित्व करते हैं। हाथी न केवल मंदिर के सामानों का हिस्सा है बल्कि ‘गज वाहनम’ सबसे पसंदीदा आकाशीय वाहक है जिसमें भगवान वेंकटेश्वर की शोभायात्रा निकलती है।

परिस्तिथिक महत्व को पहचान कर एकीकृत संरक्षण और जंगल की आग की रोकधाम का कार्य शुरू किया है। टी.टी.डी. आन्ध्र प्रदेश वन विभाग के सहयोग से और भारतीय वन्य जीवन संस्थान जो तिरुमल के वनों का परिदृश्य है।

टी.टी.डी. का वन विभाग आग के निर्माण और रख-रखाव का कार्य शुरू कर दिया है। यह प्रत्येक नवंबर से अपने परिसर के भीतर और बाहर गर्मी की आग को रोकने के लिए।

उसी तरह टी.टी.डी. ने पूरे वन क्षेत्र में तश्तरी के गढ्ढे और पानी का कुण्ड बनाया है। निर्माण किया है ताकि जीव-जन्तुओं को गर्मी के महीने में पानी की कमी न हो। यह न केवल गर्मी के तनाव को कम करता है बल्कि आस-पास के मानव बस्तियों में उनके प्रवेश को रोकता है।

जो भी भक्तगण तिरुमल के दर्शन को आते हैं वह इस बात का ध्यान रखे कि वन मार्ग से यात्रा करना पवित्र ही नहीं बल्कि दुर्लभ पेडों और जीव जन्तुओं का घर भी है।

उनकी प्रार्थना का जवाब तभी मिल सकता है जब वनों को सुरक्षित रखा जाएगा प्राकृतिक रूप से। यह भगवान वेंकटेश्वर का घर भी है।...

सप्तगिरि ग्राहकों को सूचना

अगर कोई सप्तगिरि ग्राहक के घर का पता परिवर्तन हुई तो संबंधित समाचार सप्तगिरि कार्यालय को लेख लीखकर या ई-मेइल से सूचना देना अनिवार्य है। निम्न सूचित कार्यालय पता या ई-मेइल से समाचार दीजिए।

कार्यालय पता : प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड, तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला (आं.प्र.) **(या)** ई-मेइल आई.डी. chiefeditortpt@gmail.com

श्री वेंकटेश्वर भक्ति चैनल एस.वी.बी.सी.

- श्री नागेंद्र देवरा

तिरुमल तिरुपति देवस्थान द्वारा इलक्ट्रॉनिक जगत में सफल प्रयोग, श्री वेंकटेश्वर भक्ति चैनल! भारत का सर्वश्रेष्ठ भक्ति चैनल एस.वी.बी.सी.!

सनातन धर्म के प्रचार हेतु तिरुमल तिरुपति देवस्थान (टी.टी.डी.) ने जुलाई 2008 को भारत के तात्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल जी द्वारा श्री वेंकटेश्वर भक्ति चैनल का उद्घाटन करवाया। इसी क्रम में तमिल, कन्नड़ एवं हिंदी भाषाओं में भी एस.वी.बी.सी.-2, एस.वी.बी.सी.-3 और एस.वी.बी.सी.-4 द्वारा भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी(बालाजी) के विभिन्न कैंकर्यों का प्रसारण प्रारंभ किया गया।

एस.वी.बी.सी. ने 2009 में भक्ति सीरियल्स के लिए 11नंदी अवार्डस् जीते। तमिल चैनल एस.वी.बी.सी.-2 का शुभारंभ 14 अप्रैल 2017 को हुआ, कन्नड़ चैनल एस.वी.बी.सी.-3 एवं हिंदी चैनल एस.वी.बी.सी.-4 का उद्घाटन 12 अक्टूबर 2021 को किया गया था।

इन चैनलों ने बहुत ही कम समय में अत्यधिक लोकप्रियता भी हासिल की।

एस.वी.बी.सी. के माध्यम से भगवान श्री वेंकटेश्वर बालाजी की अपार महिमा से भक्तों को परिचित करवाना ही टी.टी.डी. का प्रमुख उद्देश्य है। इस चैनल में ब्रह्मोत्सवों, उत्सवों एवं अन्य भक्तिमय कैंकर्यों का प्रसारण व्याख्यानों के साथ किया जाता है। राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, वैदिक विश्वविद्यालय, तिरुपति एवं अन्य प्रख्यात संस्थाओं के अनेकानेक पंडितों को भी आमंत्रित किया जाता है। देश के ख्यातिप्राप्त प्रबुद्ध प्रवचनकारों द्वारा श्रीमद् भागवत कथा, रामचरितमानस, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता, पुराणों, धार्मिक इतिहासों, हरिसंकीर्तनाचार्य अन्नमाचार्य के कीर्तनों, परम योगिनी तरिगोंडा वेंगमांबा के शतक, राजयोगामृत सारम्, वेंकटाचल माहात्म्यम् आदि पर आधारित कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है। अनेक ख्यातिलब्ध प्राप्त कथाकारों का प्रवचनामृत भक्तों के हृदय में भक्ति धारा का प्रवाह संचारित कर रहा है।

सनातन धर्म के प्रचार एवं परिरक्षण हेतु श्री वेंकटेश्वर भक्ति चैनल का आविर्भाव हुआ है, पाश्चात्य परंपरा के कुप्रभाव से रक्षा करने के लिए और हमारे सनातन धर्म की पावन परंपराओं, संस्कृति, आचारों-विचारों के परिरक्षण की परिस्थितियाँ निर्मित करने हेतु श्री वेंकटेश्वर भक्ति चैनल अपने ऐतिहासिक प्रयास में संलग्न है। हर घर को सनातन धर्म, संस्कृति एवं परापराओं का मंदिर बनना ही इस चैनल का उद्देश्य है। यह चैनल भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी(बालाजी) की आज्ञा एवं दिव्य कृपा से ही संचालित है। नित्यप्रति श्री वेंकटेश्वर स्वामी एवं माता पद्मावती के पूजा कैंकर्यों का सीधा प्रसारण सफलता पूर्वक किया जा रहा है। एस.वी.बी.सी. में टी.टी.डी. के स्थानीय एवं देश-विदेश के अनुबंध आलयों, देश के प्रमुख मंदिरों से संबंधित लघु चित्रों एवं उत्सवों के प्रसारण किए जाते हैं।

दक्षिण भारत के साथ पूरे भारत में इतने प्रत्यक्ष प्रसारणों को प्रसारित करने वाला इकलौता चैनल श्री वेंकटेश्वर भक्ति चैनल ही है। तिरुमल श्री वेंकटेश्वर स्वामी बालाजी के ब्रह्मोत्सवों के साथ तिरुचानूर क्षेत्र में विराजमान माता पद्मावती देवी एवं अन्य आलयों के ब्रह्मोत्सवों, संपूर्ण भारत में किए जाने वाले श्री वेंकटेश्वर कल्याणोत्सवों एवं श्री गोविंद कल्याणोत्सव को भी श्री वेंकटेश्वर भक्ति चैनल द्वारा सफलतापूर्वक प्रसारित किया जा रहा है। विभिन्न अनुबंध आलयों में होने वाले ब्रह्मोत्सवों एवं अन्य उत्सवों का प्रसारण एस.वी.बी.सी. द्वारा किया

जाता है। हिंदू धर्म परंपरा, पौराणिक कथाओं की विशिष्टताओं को प्रचारित करने वाले प्रमुख कथाकारों के प्रवचनों को भक्त दर्शकों तक पहुँचाने का महत्तर कार्य कर रहा है एस.वी.बी.सी.! यह मानवीयता के लिए एक आदर्शमय क्रिया है। ग्रामीण अंचलों से लेकर विदेशों तक भगवान श्री वेंकटेश्वर बालाजी की महिमा को पहुँचाने का उद्देश्य लेकर चल रहा है श्री वेंकटेश्वर भक्ति चैनल!

संपूर्ण भारत एवं विश्व के भक्तगण एस.वी.बी.सी. द्वारा दिए गए समाचारों एवं सूचनाओं को ही यथार्थ एवं मूल मानते हैं, अन्य फेक आनलॉइन ऍप एवं माध्यमों द्वारा किए जा रहे प्रचार प्रसार को पूर्णतः सत्य नहीं माना जा सकता। एस.वी.बी.सी., टी.टी.डी. का अधिकारिक समाचार माध्यम है। यहाँ सुदूर प्रांतों से आए हुए भक्तगण एस.वी.बी.सी. में दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों, समाचारों, सूचनाओं का ही अनुसरण करते हैं चाहे वे दर्शकों के लिए आनलॉइन टिकट उपलब्धि हो, आवासीय आरक्षण हो, समय सारणी हो या फिर अन्य कोई भी समाचार हो जो तिरुमलाधीश से संबंधित हो।

श्री महाविष्णु के अवतार परब्रह्म भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी बालाजी की नित्य सेवाओं का प्रसारण- एस.वी.बी.सी. द्वारा सुप्रभात सेवा प्रातः 3:00 बजे से लेकर एकांतसेवा तक किया जाता है। जिनमें तोमाल एवं कोलुवु सेवा प्रातः 3:30 बजे पर, अर्चना प्रातः 4:00 बजे, वेद पारायण प्रातः 9:00 बजे, कल्याणोत्सव मध्याह्न 12:00 बजे, डोलोत्सव मध्याह्न 1:50 पर, अर्जित ब्रह्मोत्सव मध्याह्न 2:50 पर, सहस्त्र दीपालंकार सेवा सायं 5.00 बजे, घंटानाद रात्रि 7:30 पर एवं विशिष्ट पर्व दिनों में श्री वेंकटेश्वर भक्ति चैनल द्वारा विशेष कार्यक्रम भी प्रसारित किए जाते हैं तिरुमल में हर पूर्णिमा को गरुड़ सेवा, रथसप्तमी पर्व दिन के अवसर पर सप्तवाहन सेवा, वैकुंठ एकादशी पर्व दिन पर स्वर्ण रथोत्सव, द्वादशी के दिन चक्रस्नान, ज्येष्ठाभिषेक, प्रणयकलह महोत्सव, पद्मावती परिणयोत्सव, वार्षिक वसंतोत्सव, पवित्रोत्सव, कार्तिक महीने में कार्तिक वनभोजन, स्नपन तिरुमंजनम्, श्रीरामनवमी के विशिष्ट पर्व दिन के अवसर पर हनुमंत वाहन सेवा तथा विशेष तिथियों में संपन्न होनेवाले विशेष कैंकर्यों का प्रसारण किया जाता है।

ॐ नमो वेंकटेशाय!

“तिरुमल ब्रह्मोत्सवों का वैभव”

- श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण

आमुख

संसार में हिन्दूधर्म का बेजोड़ धमाका है। हिन्दूधर्म अनुपम आचरण है। सहधर्माचरण। यह एक अत्युत्तम जीवन-विधान है, जो दुनियाभर के धर्मों का सूत्रप्राय आदर्श रहा है।

वैसे जब पूरा संसार अपने हिन्दूधर्म के मौलिक सूत्रों का अनुसरण कर अपने रूप-विधान को जताया, तो भारत में इस धर्म के विरोधी खड़े होकर, इस धर्म का सख्त विरोध कर चिरकाल इस धर्म से कुछ ताकतों ने संघर्ष चलाया; युद्ध किया। इन ताकतों को पुराणों ने ‘‘राक्षस, दानव, दैत्य, असुर; आदि नाम देकर वर्णन किया।

इन आसुरी शक्तियों के निर्मूलन के संदर्भ में ही पुराण-इतिहासों की रचना की गयी है। असुर आर्ष-विरोधी होते थे। वे वेदधर्म को निरसते थे। यज्ञ-यजनों तथा कर्मकाण्डों का डट कर विरोध करते थे। उनमें बाधा ड़ाल कर उन्हें

निरा रोक देने के प्रयत्न करते थे, जिसके विरोध व निर्मूलन-हेतु, यहाँ तक कि, देवताओं की सर्वोपरि शक्तियों- विष्णु, इन्द्र, लक्ष्मी, दुर्गा - आदियों को मानव-लोक में जनम लेकर आना पड़ता था।

अस्तव्यस्त जनजीवन के सुधार के लिए परमात्मा का अनेकों बार इस धरातल पर, पुण्यतम योनियों में जनम लेकर आना हुआ।

श्लोक : *कृतेतु नारसिंहोभूत्, त्रेतायां रघुनंदनः।*
द्वापरे वासुदेवश्च, 'कलौ' वेंकटनायकः।।

इस सिलसिले में - 'कृत' या 'सत्ययुग' में नरसिंहदेव, 'त्रेतायुग' में रघुनंदन राम, 'द्वापरयुग' के संरक्षण के लिए श्रीकृष्णप्रजापति और अनाथ 'कलियुग' के परि रक्षणार्थ श्री वेंकटेश भगवान का आविर्भाव हुआ था।

कलियुग की रक्षा के लिए अवतरित गोलोक के यजमानी ''श्रीकृष्णपरमात्मा'' अपने अवतार के उपसंहरण के तुरंत बाद, कलियुग के बाध्य महर्षियों के अनुरोध के उपलक्ष्य में पुनः कलियुग में आना पड़ा, क्यों कि कलियुग में राक्षसों का जनम होना संभव हो गया।

श्रीनिवास महाशय का आविर्भाव

कृतादि युगों में घटे कुछ धर्म-विरुद्ध कर्मों के कारण, धर्मदेवता का एक-एक पाद नष्ट होता आया। ऐसा धर्म की नियति है। ऐसे कलियुग तक आते-आते धर्मदेवता के एक ही चरण बचा, जिसके सहारे उसे कल्लोलित अनाथ कलियुग को पार कराना था।

इस कल्लोलित कलियुग के तारण-हेतु कण्व, भृगु, वशिष्ठ आदि ऋषिश्रेष्ठ मिल कर गंगा-तट पर ''कलिशांति-यज्ञ'' कर रहे थे, तो वहाँ त्रिलोक-संचारी नारद-मुनि पधारे और उन महर्षियों को अपने यज्ञ के अधिकारी चुनने की सलाह देकर चले गये। महर्षियों के आदेशानुसार भृगुमहर्षि वैकुंठ में जाकर श्रीमन्महाविष्णु को यज्ञपुरुष चुन कर आया। महाविष्णु भूलोक में आये। अपने से रूठ कर चली हुई श्रीमन्महालक्ष्मी के ध्यान में आज की तिरुमलगिरियों से आग्नेय दिशा में 40 कि.मी. की दूरी पर ''नारायणवरम्'' नामक प्रान्त में सात वर्ष कठोर तपस्या करके ''श्रीनिवास (लक्ष्मीजी का निवास वाला हृदयी)'' बन गया।

कालान्तर में इसी श्रीनिवास ने नारायणवरम् के पालक ''राजा आकाश और धरणीदेवी'' की पुत्री ''पद्मावती'' नामक कन्या से विवाह कर तिरुमलगिरियों में आकर ''श्री वेंकटेश्वर'' बन कर, समस्त ब्रह्म, इन्द्र, दिक्पालादि देवगणों को साथ लेकर कलियुग का निरीक्षण कर रहा है।

विजयोत्सव

इस प्रकार सत्य, त्रेता और द्वापरयुगों में बहुतेरे आर्षविरोधी दैत्यों का संहरण बहुत चला था। अनेकों

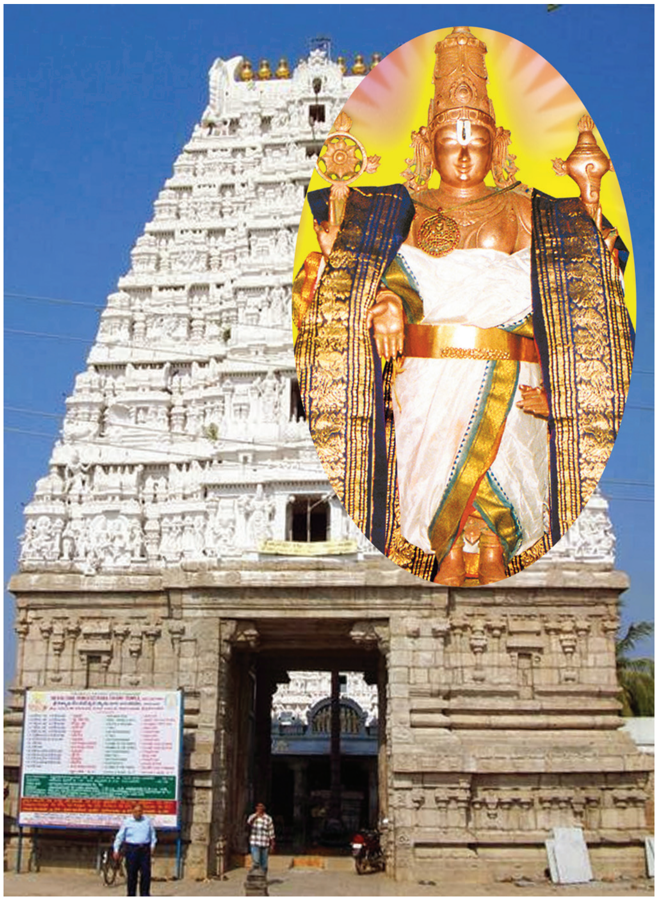

दुर्दान्त राक्षस वीरों की मृत्यु हो गयी, मगर फिर भी इन युगों में मरने से बचे हुए राक्षस कलियुग में जन्म लेकर आ गये। ये राक्षस भारत के जल-थल दुर्गों में अपना आवास तय कर रहने लगे और साधारण जनता को तथा सज्जन एवं भक्तजनों को काफी मात्रा में सताने लगे। ब्रह्मादि देवताओं ने तिरुमलगिरि पर ''आनंदनिलय'' में विराजमान महाविष्णु के अवतार रूप श्रीनिवास ही श्री वेंकटेश्वर भगवान से अभ्यर्थना की कि वे उन सभी क्रूर राक्षसों का वध कर लोक-पालन निष्कंटक बना दे।

बस, श्रीस्वामी श्रीनिवास ने अपना सुदर्शनचक्र भेजा। सुदर्शनचक्र ने भूमंडल पर जल-थल दुर्गों में छुपे विनाशकारी, मानव-हंतक सब राक्षसों का वध कर वापस लौट आया।

लोक निष्कंटक तथा सुखमय बन गया!

लोगों की खुशी का ठिकाना न रह गया!!

ब्रह्म, इन्द्र, दिक्पालकादि देवगण सानंद झूम उठे!!!

इस शुभ अवसर के उपलक्ष्य में सत्यलोकाधिपति ब्रह्मदेवजी ने सब दिक्पालकों से एक प्रस्तावना रखी कि इस राक्षस-विनाशन के शुभ अवसर का एक महा उत्सव बनाया जाय! ब्रह्म के इस प्रस्ताव का सबने आमोद प्रकट किया। श्रीनिवास ने भी उत्सव मनाने की अपनी सम्मति प्रकट की। सब भक्तजन, सज्जन, साधु, संत, राजा, महराजा, लोग ने इस पर संतोष प्रकट किया।

ध्वजारोहण

ब्रह्मोत्सवों के प्रारंभ-हेतु सर्व प्रथम अंकुरार्पण किया जाता है। अंकुरार्पण के लिए प्रथमतः सर्वश्रेष्ठ बाँबी की मिट्टी का, पुरोहित लोग संग्रहित करते हैं।

इस ''श्रीविश्वावसु'' नाम के वत्सर के अंतर्गत मनाये जाने वाले ब्रह्मोत्सवों के भाग में 23-09-2025, शुभमंगलवार-विदिया-हस्ता नक्षत्रयुक्त शुभमुहूर्त के शुभ अवसर पर अंकुरार्पण के लिए ''मृत्संग्रहण'' किया जाता है। इसी शुभ दिन पर, देवी-देवताओं के आह्वान में ''ध्वजपट'' का चित्रांकन किया जाता है। ध्वजपट पर अलग-अलग देवी-देवताओं का अपना-अपना चिह्न होता है। वैसे, श्री वेंकटेश्वर जी महराज का ''गरुड़ध्वज'' है। पताके पर ''गरुड़'' का चित्र अंकित किया जाता है। इसका यह मतलब होता है कि श्रीस्वामीजी के विजयोत्सव-रूपी ब्रह्मोत्सवों का समस्त देवी-देवताओं को उन-उन लोकों में जाकर विनता-सुत गरुड़-सेनापति आह्वान देता है।

इस साल, अर्थात् - श्रीविश्वावसु नाम संवत्सर का ''ध्वजारोहण'' दिनांक 24-09-2025, बुधवार, तदिया-चित्रा नक्षत्र-युक्त शुभ-तिथि पर किया जाता है। इस दिन ध्वजपट फहराया जाता है। इसी शुभ दिन पर तिरुचानूर में विराजमान ''श्रीपद्मावतीतायार'' का ''नवरात्रि-उत्सव'' का शुभारंभ भी होता है। अंकुरार्पण और ध्वजपटारोहणों के संपन्न हो जाने से, अब श्री श्रीनिवास-महाराजा के ब्रह्मोत्सव धूम-धमाकों के साथ प्रारंभ हो जाते हैं।

वाहन - सेवाएँ

तिरुमल भगवान बालाजी उत्सव-प्रिय देवता है। उनका दिनोत्सव, वारोत्सव, पक्षोत्सव तथा वार्षिक उत्सव कलियुग वैकुंठ-रूपी तिरुमल दिव्य-धाम में निरंतर अत्यंत वैभव-रूप में संपन्न होते रहते हैं, जिनका वर्णन आदिशेष भी न कर पावे। अब तिरुमल-धाम में रोजाना श्रीस्वामी की वाहन-सेवाओं का ताँता लगा हुआ होता है। यह नौ दिन संपन्न होते हैं। ब्रह्मोत्सवों के समय में विशेष-दर्शन न होंगे।

प्रथम दिवस श्री वेंकटेश्वरजी महराज ''महाशेषवाहन'' पर ग्रामोत्सव बनाते हैं। इस महत्तर शेषवाहन गरिमा देखते-देखते सहस्र नेत्र पर्याप्त नहीं

होते। दूसरे दिन भगवान बालाजी ''लघुशेषवाहन'' पर विराजमान हो तिरुमल-वीथियों में अपना पर्यटन कर, नेत्रोत्सव प्रदान करते हैं।

''हंसवाहन'' तीसरे दिन शोभायमान होकर संपन्न होता है। ''सिंहवाहन'' पर चौथा विचरण ज्वाज्वल्यमान होकर चलता है। ''सर्वभूपालवाहन'' समस्त सम्राट् लोग स्वयं अपने कन्धों पर श्रीस्वामी को लेकर विचरते हों।

''गरुड़वाहन'' व ''गरुड़सेवा'' पाँचवा दिन अत्यंत प्रचलित सेवा है। इस दिन प्रायः पूर्णिमा तिथि होती। गरुड़वाहन कभी भी पूर्णिमा के दिन ही संपन्न होता है। श्रीस्वामी की सब वाहनों में गरुड़वाहन या गरुड़-सेवा सर्वप्रिय अथवा विशेष जन-प्रिय सेवा होती है। उस दिन तिरुमलगिरि पर लाखों की तादाद में भक्तजन इकट्टे हो जाते हैं। श्रीविश्वावसु वत्सर की गरुड़सेवा दिनांक 28-09-2025 रविवार पर संपन्न होता है। गरुड़सेवा से अगली सेवा हनुमंत-वाहन है, जो गरुड़सेवा के पश्चात् वाली जन-प्रिय वाहन हैं।

तदनंदर ''गजवाहन'' संपन्न होता है। ''अश्ववाहन'' पर सवाह होते श्री वेंकटेश्वर बालाजी एक निज सरदार के तौर पर दर्शन देते हैं। श्री वेंकटेश्वर सप्तगिरीश सम्राट का ''महारथोत्सव'' अत्यंत वैभवपूर्ण, उत्सव संपन्न किया जाता है। इस साल दिनांक 01-10-2025 बुधवार-अश्वयुज शुद्ध नवमी की तिथि पर संपन्न होयेगा।

ध्वजावरोहण

इसके पश्चात् विजयदशमी आविष्कृत हो जाता है। श्रीविश्वावसु विजयदशमी, दिनांक 02-10-2025, गुरुवार के दिन सुबह शुभमुहूर्त पर श्रीस्वामी के ''सुदर्शनचक्र'' का शुभ मंगल ''शीतल स्नान'' श्रीस्वामी की पुष्करिणी में कर दिया जायेगा। अशेष जन इस शुभ संदर्भ में ''श्रीचक्रत्ताल्वार'' के साथ पवित्र पुष्करिणी में शुभमंगल स्नान आचरित करके पुनीत बनते हैं।

और, सायं मंगल मुहूर्त में आलय के अधिकारी, राजपुरोहित, ग्राम-प्रमुख और असंख्य भक्तजनों के समक्ष में - गरुड़ाल्वार का ध्वजपट ''अवनत'' कर दिया जाता है। इस क्रियाकलाप से तिरुमलगिरिराज श्री वेंकटेश्वर बालाजी भगवान के ब्रह्मोत्सव सर्व समाप्त बन जाते हैं।

परिसमाप्ति

तिरुमल, गरुड़ाद्रि, अंजनाद्रि, शेषाद्रि, सप्तगिरि आदि नामों से विश्व विख्यात तिरुमलगिरियों में सप्तगिरीश भगवान श्री वेंकटेशजी महराज का यह 1) नारायणवरम्, 2) कार्वेटिनगरम्, 3) अप्पलायगुंटा, 4) तिरुचानूर, 5) श्रीनिवासमंगापुरम्, 6) तिरुमलगिरि - छठा पड़ाव रहा।

श्रीनिवास का प्रस्थान ''एरिकंबट्टू'' नामक मुनि-वाटिका से प्रारंभ हुआ था, जिस मुनिवाटिका की पालिका थी - वकुलमालिका, जिसने श्रीनिवास के सिर की चोट की चिकित्सा कर, स्वस्थ बनाया और दूतिका बन कर नारायणवरम् के शासक राजा आकाश और युवरानी ''पद्मवतीजी'' को अपनी भविष्य-वाणी से मना कर, ''श्रीनिवास का परिणय'' बना कर इतनी सारी कहानी की अधिकारिणी बनी हुई है।

एरिकम्बट्टू से एडुकोंडलु (सात पहाड़) सात पड़ाव बनते हैं। और - श्री वेंकटेश्वर बालाजी गरुड़ाद्रि, अंजनाद्रि, शेषाद्रि, वृषाद्रि आदि वाले सातों पहाड़ों वाली तिरुमलगिरि पर आसीन होकर, कलियुग की तारणा कर रहा है।

हम हिन्दुओं के लिए अत्यंत पवित्र तिरुमल सर्वश्रेष्ठ संपदाओं का दाता बन कर विराजमान है। आइये-सात पहाड़ों के सम्राट भगवान के दर्शन में तर जाते हैं और इन सातों जनमों के पापों का परिहार कर धन्य बन जावें।

ॐ नमो वेंकटेशाय!

(आयुर्वेद)

एलोवेरा : घृतकुमारी

- डॉ.सुमा जोषि

एलोवेरा, जिसे संस्कृत में ''घृतकुमारी'' कहा जाता है, एक चमत्कारी औषधीय पौधा है जिसकी ख्याति प्राचीन काल से संपूर्ण विश्व में रही है। भारत में आयुर्वेदिक ग्रंथों में इसका उल्लेख विशेष रूप से किया गया है, जहाँ इसे त्रिदोषनाशक, रक्तशोधक और त्वचा रोगों में उपयोगी माना गया है। यह माना जाता है कि ऋषि-मुनि इसे औषधीय पौधे के रूप में प्रयोग करते थे और इसे दीर्घायु एवं रोगमुक्त जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानते थे। इसके साथ ही कई लोककथाओं और पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में भी एलोवेरा का उल्लेख मिलता है।

विश्व पटल पर भी एलोवेरा का ऐतिहासिक महत्व अत्यंत समृद्ध रहा है। प्राचीन मिस्र में इसे ''अमरता का पौधा''(Plant of Immortality) कहा जाता था और इसे मृतकों के साथ कब्रों में रखा जाता था ताकि वे परलोक में भी स्वस्थ रहें। प्राचीन चीन और अरब देशों में भी यह एक महत्वपूर्ण औषधीय वनस्पति के रूप में प्रयुक्त होती रही है। इस प्रकार, एलोवेरा न केवल भारत में बल्कि विश्वभर की प्राचीन चिकित्सा परंपराओं का अभिन्न अंग रहा है।

एलोवेरा मूल रूप से उत्तरी अफ्रीका, मेडिटेरेनियन क्षेत्र और अरब देशों का पौधा माना जाता है, लेकिन आज यह उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में विश्वभर में पाया जाता है। भारत में यह विशेष रूप से राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और दक्षिणी राज्यों में व्यावसायिक रूप से उगाया जाता है। इसकी खेती कम पानी और शुष्क भूमि में भी आसानी से की जा सकती है। एलोवेरा का वैज्ञानिक नाम Aloe vera (L.) Burm.f. है और यह पौधा Asphodelaceae कुल (family) के अंतर्गत आता है, जिसे पहले Liliaceae कुल में रखा जाता विश्वभर में एलोवेरा की लगभग 400 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं, परंतु औषधीय दृष्टिकोण से Aloe vera ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। इसकी विशेष पहचान इसकी मोटी, मांसल, कांटेदार पत्तियों और उनमें औषधीय जेल के कारण होती है। एलोवेरा एक रसीला (succulent) पौधा है जिसमें पत्तियाँ मोटी, मांसल और कांटेदार किनारों वाली होती हैं। इसकी पत्तियों की लंबाई लगभग 30 से 50 सेमी तक होती है। पत्तों के भीतर एक पारदर्शी जेल होता है जो औषधीय दृष्टि से अत्यंत मूल्यवान होता है। पौधे कभी-कभी पीले या नारंगी रंग के फूल भी खिलते हैं, जो एक लंबी पुष्पदंडी पर स्थित होते हैं।

एलोवेरा का रासायनिक संघटन

एलोवेरा की पत्तियों में पाया जाने वाला जेल रासायनिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध होता है। इसमें लगभग 75 से अधिक सक्रिय यौगिक पाए जाते हैं, जिनमें प्रमुख रूप से विटामिन्स (A, C, E, B1, B2, B6, B12, फोलिक एसिड), खनिज तत्व (जैसे कैल्शियम, मैग्नीशियम, जिंक, आयरन, सेलेनियम, पोटेशियम) एमिनो अम्ल, एंजाइम्स (जैसे amylase, lipase, catalase) तथा शर्करा (polysaccharides जैसे ग्लुकोमैनन, एस्मानन) शामिल हैं। एलोवेरा में मौजूद एंथ्राक्विनोन (Anthraquinones) जैसे एलोइन (aloin), एमोडिन (emodin) आदि इसके जंतुनाशक और जुलाब गुणों के लिए जाने जाते हैं। इसके अतिरिक्त, इसमें सैपोनिन्स, लिग्निन और सैलिसिलिक एसिड भी होते हैं, जो इसे सूजन-रोधी, जीवाणुनाशक और त्वचा-रक्षक गुण प्रदान करते हैं।

आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से घृतकुमारी

आयुर्वेद में एलोवेरा को एक अत्यंत गुणकारी औषधि माना गया है। यह तिक्त (कड़वे) और मधुर (मीठे) रसयुक्त,

गुरु (भारी) और स्निग्ध (चिकनाईयुक्त) गुणों वाला तथा शीतवीर्य (शीतल प्रवृत्ति) औषध है। इसका विपाक मधुर होता है और यह मुख्य रूप से पित्त और वात दोष को संतुलित करता है। इसके सेवन से शरीर में ठंडक उत्पन्न होती है, आंतरिक सूजन कम होती है, और पाचनतंत्र को बल मिलता है। एलोवेरा को आयुर्वेद में रसायन माना गया है, जो शरीर को दीर्घायु, शक्ति और रोगों से लड़ने की क्षमता प्रदान करता है। यह रक्तशोधक, यकृत उत्तेजक, स्त्री रोगहर, व्रणशोधक (घाव साफ करने वाला) तथा त्वचा रोगों में अत्यंत लाभकारी माना गया है। विशेष रूप से यह आरक्तप्रदर (अत्यधिक रक्तस्राव), अनियमित मासिक धर्म व गर्भाशय की शुद्धि में प्रयोग किया जाता है। आयुर्वेद में घृतकुमारी को एक ऐसी औषधि के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है जो बाह्य व आंतरिक दोनों ही प्रकार की चिकित्सा में उपयोगी है।

एलोवेरा के उपयोग की विधियाँ

1) रस (Juice) : रोज सुबह खाली पेट 10–20 ml रस गर्म पानी के साथ लिया जा सकता है।

2) जेल (Gel) : त्वचा पर प्रत्यक्ष लगाया जाता है - जलन, मुंहासे, फुंसी, कटने, जलने पर।

3) चूर्ण (Powder) : सूखे एलोवेरा को चूर्ण बनाकर कब्ज या चर्म रोग में प्रयोग किया जाता है।

4) कड़वा घृतकुमारी (Aloe vera pulp boiled in ghee) : स्त्री रोगों में विशेष उपयोगी है।

5) शीतल पेय या औषधीय टॉनिक : एलोवेरा और आँवला/ हरिद्रा के साथ संयुक्त रस बनाया जाता है।

एलोवेरा (घृतकुमारी) के स्वास्थ्य लाभ

1) कब्ज से राहत : एलोवेरा का रस मल को मुलायम करता है & आँतों की गति को बढ़ाता है।

2) पाचन शक्ति में सुधार : यह जठराग्नि को प्रज्वलित करता है और अपच को दूर करता है।

3) गैस और ऐंठन से छुटकारा : एलोवेरा में मौजूद एंजाइम्स पाचन में सहायक होते हैं और गैस्ट्रिक समस्याएँ कम करते हैं।

4) अम्लपित्त (Acidity) में उपयोगी : इसके शीतवीर्य गुण के कारण यह पेट की जलन और एसिडिटी में राहत देता है।

5) त्वचा को नमी प्रदान करता है : एलोवेरा जेल त्वचा की नमी बनाए रखता है और उसे मुलायम बनाता है।

6) इसके जीवाणुरोधी गुण मुंहासों को रोकते हैं और त्वचा को साफ रखते हैं।

7) सनबर्न से राहत : एलोवेरा जेल जलन और लालिमा को शांत करता है।

8) त्वचा की झुर्रियाँ कम करता है : यह त्वचा की कोशिकाओं को पुनर्जीवित करता है और बढ़ती उम्र के लक्षणों को कम करता है।

9) डैंड्रफ का समाधान : एलोवेरा सिर की खुश्की और डैंड्रफ को कम करता है।

10) बालों की ग्रोथ में सहायक : यह जड़ों को पोषण देता है & बालों का लंबा व घना बनाता है।

11) रक्तशुद्धि करता है : यह रक्त से विषैले तत्वों को बाहर निकालने में मदद करता है।

12) लिवर (यकृत) की कार्यक्षमता बढ़ाता है : यह यकृत की सूजन और कार्यविकलता में उपयोगी होता है।

13) स्त्री रोगों में उपयोगी : मासिक धर्म की अनियमितता, रक्तप्रदर व श्वेतप्रदर में लाभकारी।

14) प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत करता है : इसके एंटीऑक्सिडेंट्स शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाते हैं।

15) मधुमेह (डायबिटीज) में सहायक : रक्त में शर्करा स्तर को नियंत्रित करने में उपयोगी।

16) घाव भरने में तेज : एलोवेरा जेल घाव पर लगाने से शीघ्र भराव होता है।

17) जलने पर उपयोगी : त्वचा के जलने पर ठंडक और आराम देता है।

18) वजन घटाने में सहायक : मेटाबोलिजम को बढ़ाता है और डिटॉक्स में मदद करता है।

19) कैंसर-रोधी गुण : शोधों में पाया गया है कि इसमें कैंसर-रोधी यौगिक होते हैं।

20) हृदय स्वास्थ्य के लिए उपयोगी : रक्तचाप को नियंत्रित करता है और कोलेस्ट्रॉल घटाता है।

21) गठिया (Arthritis) में राहत : सूजन व दर्द को कम करता है।

22) मुँह के छालों में उपयोगी : जेल लगाने से छालों में आराम मिलता है।

23) दाँत और मसूड़ों के लिए लाभकारी : जीवाणुरोधी गुण मसूड़ों को स्वस्थ रखते हैं।

24) एलर्जी में राहत : त्वचा की एलर्जी व खुजली में उपयोगी।

25) सोरायसिस में उपयोगी : त्वचा की परतदार सूजन में राहत देता है।

26) एक्जिमा (eczema) में फायदेमंद : त्वचा की खुश्की और जलन में आराम देता है।

27) डायपर रैश पर प्रयोग : बच्चों के डायपर रैश पर जेल लगाना लाभकारी है।

28) बवासीर (piles) में उपयोगी : जेल मलाशय की सूजन व जलन कम करता है।

29) आँखों की जलन में उपयोग : एलोवेरा युक्त जल या गुलाबजल से आँखें धोने पर आराम मिलता है।

30) शरीर में जलन व दाह कम करता है : शीतवीर्य गुण शरीर में ठंडक लाता है।

31) सिरदर्द में राहत : माथे पर लगाने से सिरदर्द में आराम मिलता है।

32) तनाव और अनिद्रा में सहायक : एलोवेरा रस शांति प्रदान करता है।

33) होंठों को मुलायम बनाता है : जेल होंठों की फटने की समस्या दूर करता है।

34) कील-मुहाँसों में प्रभावी : दिन में दो बार लगाने से कील-मुहाँसे सूखते हैं।

35) टैनिंग कम करता है : धूप से झुलसी त्वचा को ठंडक देकर रंगत बहाल करता है।

36) फटी एड़ियों का इलाज : जेल को फटी एड़ियों पर लगाने से नरमी आती है।

37) सांस की बदबू में सुधार : इसके रस से कुल्ला करने पर लाभ मिलता है।

38) नाक की एलर्जी में लाभकारी : सूजन को कम कर सांस लेने में सहायक।

39) पीठ दर्द में उपयोग : जेल मालिश करने पर मांसपेशियों की सूजन घटाता है।

40) त्वचा को उजला बनाता है : एलोवेरा का नियमित उपयोग त्वचा की चमक बढ़ाता है।

एलोवेरा : सावधानियाँ और निषेध

1) **गर्भवती महिलाओं को सेवन से बचना चाहिए :** एलोवेरा के आंतरिक उपयोग (जैसे रस या चूर्ण) से गर्भाशय संकुचन हो सकता है, जिससे गर्भपात का खतरा हो सकता है। अतः गर्भवती महिलाओं को बिना विशेषज्ञ परामर्श के इसका सेवन नहीं करना चाहिए।

2) **स्तनपान कराने वाली माताएँ :** एलोवेरा के कुछ सक्रिय घटक दूध के माध्यम से शिशु में जा सकते हैं, जिससे डायरिया या एलर्जी हो सकती है। इस अवस्था में सावधानी आवश्यक है।

3) **अत्यधिक मात्रा में सेवन न करें :** अधिक मात्रा में एलोवेरा का रस या लेटेक्स (पीला पदार्थ) लेने से दस्त, पेट दर्द, जलन, इलेक्ट्रोलाइट असंतुलन और निर्जलीकरण हो सकता है।

4) **एलोइन युक्त लेटेक्त का दीर्घकालीन सेवन हानिकारक है :** एलोवेरा के पत्ते से निकलने वाला पीला पदार्थ (एलोइन) एक शक्तिशाली जुलाब (purgative) होता है, जिसका लंबे समय तक सेवन करने से आंतों की शक्ति कमजोर हो सकती है और कैंसर का खतरा भी बढ़ सकता है।

5) **एलर्जी की संभावना :** कुछ लोगों में एलोवेरा जैल के त्वचा पर प्रयोग से लालिमा, खुजली या जलन हो सकती है। ऐसे में पैच टेस्ट करना आवश्यक है।

6) **किडनी रोगियों के लिए अनुशंसित नहीं :** एलोवेरा के कुछ घटक मूत्रवर्धक (diuretic) प्रभाव रखते हैं, जिससे किडनी पर दबाव पड़ सकता है। किडनी रोगियों को इसके सेवन से पहले वैद्य/चिकित्सक से सलाह लेनी चाहिए।

7) **दवाओं के साथ परस्पर क्रिया (Drug Interactions) :** एलोवेरा का सेवन कुछ दवाओं जैसे मधुमेह, उच्च रक्तचाप और मूत्रवर्धक दवाओं के साथ करने पर उनका प्रभाव बढ़ा या घटा सकता है। इसलिए इसका चिकित्सकीय परामर्श से ही सेवन करना चाहिए।

8) **बच्चों में सेवन वर्जित :** छोटे बच्चों को एलोवेरा का रस या चूर्ण नहीं देना चाहिए, क्योंकि यह उनकी नाजुक पाचन प्रणाली पर विपरीत प्रभाव डाल सकता है।

किसी भी प्रश्न के लिए किसी आयुर्वेदिक चिकित्सक से परामर्श अवश्य लें। यहाँ केवल जानकारी दी गई है। स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें।

सितंबर महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

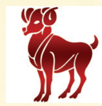

मेष राशि - विभिन्न आर्थिक योजनाओं को क्रियान्वित करने के संकेत हैं, परंतु कुछ भ्रामक धारणाओं के कारण विघ्न एवं स्वगृही दृष्टि रहने से कुछ रुके हुए कार्यों में प्रगति होगी। धन-धान्य की वृद्धि, आरोग्य सुख, कौटुम्बिक चिन्ता वाहन कष्ट, छात्रों के लिए प्रगतिशीलता, आर्थिक सफलता, नौकरी सुखद, रचनात्मक कार्य से लाभ, सहयोगियों से लाभ।

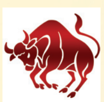

वृषभ राशि - मासफल उत्तम रहेगा। शुक्र तृतीय भाव में होने से वृथा दौड़-धूप एवं निकट बन्धुओं से तनाव अधिक रहेगा। व्यवस्थिति दिन-चर्या, आर्थिक संतुलन, श्रमानुकूल सफलता, नौकरी-व्यावसाय की स्थिति उत्साह वर्धक, इष्ट-मित्रों-स्वजनों का सहयोग। परिवार में मतभेद एवं मन में अशान्ति रहेगी। संतान कष्ट, राजकीय समस्याओं का समाधान मिलेगा।

मिथुन राशि - बुध तृतीयस्थ रहने से मान-सम्मान-यश-प्रतिष्ठा-प्रभाव का विस्तार, आरोग्य सुख, रचनात्मक कामों में प्रगति, भ्रातृ सुख, राजकीय सहयोग, प्रेम सम्बन्धों में प्रगाढ़ता, रोजी-रोजगार में अनुकूलता रहेगी। बुधास्त रहने से कार्यक्षेत्र व व्यवसाय में संघर्ष अधिक होगा। उत्तरार्ध में ग्रहों का परिवर्तन मिश्रित फलदायक किन्तु शुभ प्रभाव की वृद्धि, आकस्मिक लाभ।

कर्कटक राशि - शुक्र का संचार होने से व्यवसाय-नौकरी, अन्न-वस्त्र, द्रव्यादि का लाभ, कर्म क्षेत्र में तत्परता, स्वास्थ्य उत्तम, नौकरी में परिवर्तन सम्भव, गृहस्थजीवन सुखी, पठन-पाठन में रुचि, उद्योग-धन्धे में सफलता, अर्थ लाभ। आर्थिक क्षेत्र में असमंजस की स्थिति होने से मन अशान्त रहेगा, व्यवसाय में भी परिवर्तन होगी।

सिंह राशि - आत्मीयजनों का सहयोग-समर्थन, प्रतियोगी क्षेत्र में सफलता, आरोग्य सुख, गृहस्थ जीवन सुखी, आर्थिक विकास, निर्माण कार्यों में रुचि। सूर्य स्वराशिगत होने से कुछ बिगड़े कामों में सुधार एवं आय के साधनों में वृद्धि होगी। किसी नवीन कार्यक्षेत्र में धन का निवेश करने की योजना भी बनेगी। सामाजिक संलग्नता रोजी-रोजगार में अनुकूलता रहेगी।

कन्या राशि - पूर्वार्द्ध में सूर्य-बुध का संचार द्वादशस्थ होने से आय के साधनों में वृद्धि के साथ-साथ खर्च भी अधिक रहेंगे। कटु-तिक्त अनुभव, कार्यों में श्रम साध्य सफलता, कौटुम्बिक चिन्ता, विद्या-बुद्धि का विकास, आर्थिक व्यापारिक क्षेत्र में प्रगति, मित्रों से सहयोग मिलेगा। दूरस्थ यात्राएँ, स्वास्थ्य सामान्य, सिर-दर्द, आँखों में कष्ट के कारण परेशानी होगी। क्रोध अधिक।

तुला राशि - मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। स्वास्थ्य में विकार, माता-पिता से वाद-विवाद एवं नौकरी-व्यवसाय में परिवर्तन का विचार बनेगा। वाद-विवादों में ग्रस्तता रहेगी। आर्थिक संतुलन, सामयिक कार्यों में प्रगति, सामाजिक संलग्नता, शैक्षणिक अनुकूलता, यात्रा सुखद। उत्तरार्ध में मिला-जुला प्रभाव दिखेगा।

वृश्चिक राशि - शारीरिक स्वस्थता, मन प्रसन्न, संतान पक्ष की उन्नति, पारिवारिक सुख, मित्रों का सहयोग, गृह-भूमि-कृषि कार्यों में प्रगति, नौकरी में उल्लास, रोजी-रोजगार में लाभ, स्वास्थ्य चिन्ता, यात्रा में रुचि, रोजगार परक समस्या बढ़ेगी। मंगल एकादश भाव में संचार करने से बनते कामों में विघ्न तथा घरेलु उलझनों के कारण मन चिन्तित होगा।

धनुष राशि - मंगल-गुरु-शनि की दृष्टियां रहने से कार्यक्षेत्र में स्थिति उछल-पुछल वाली रहेगी। साहस-पराक्रम की अभिवृद्धि, स्वास्थ्य उत्तम, सामयिक समस्याओं का समाधान, आर्थिक विकास, राजकीय सहयोग, प्रतियोगी क्षेत्र में सफलता, व्यापार में अनुकूलता रहेगी। उत्तरार्ध में अनुकूल वातावरण बनेगा। गृहस्थ जीवन सुखी, ज्ञान वृद्धि, लाभ, शुभ संवाद, यात्रा कष्ट।

मकर राशि - उग्र-क्रूर कामों में रुचि, अनावश्यक वाद-विवादों से बचना चाहिये। आर्थिक संतुलन, सामयिक-सामाजिक संलग्नता, प्रतियोगी क्षेत्र में सफलता, कौटुम्बिक सुख, रोजी-रोजगार में लाभ। अष्टम भाव में सूर्य-बुध-केतु ग्रहों का योग स्वास्थ्य की दृष्टि से विषय परेशानिकारक ही रहेगा। व्यवसाय के क्षेत्र में विभिन्न उलझनों का सामना करना पड़ेगा।

कुंभ राशि - इस राशि पर गुरु की शुभ किन्तु सूर्य की अशुभ दृष्टि होने से व्यवसाय में उन्नति व प्रगति के कुछ मार्ग प्रशस्त होंगे। स्वास्थ्य उत्तम, कार्यों में श्रमपूर्ण सफलता, आर्थिक-व्यापारिक प्रगतिशीलता, विरोधियों पर दबाव, गृह-भूमि, कृषि कार्यों में रुचि, उत्तरार्ध में सकारात्मक बढ़ेगी। गृह में कोई मांगलिक कार्य होगा। कुछ बिगड़े कार्यों में विशिष्ट व्यक्तियों से सम्पर्क करने से सुधार होगा।

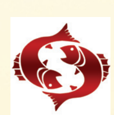

मीन राशि - उग्र कामों में रुचि, स्वास्थ्य बाधा, सामयिक कार्यों में प्रगति, सहयोगियों से अनुकूलता, पठन-पाठन में उदासीनता, रोजी-रोजगार में सफलता, घरेलू वातावरण सुखद, विशिष्टजनों से सम्पर्क, उत्तरार्ध में सकारात्मक परिवर्तन, अर्थिक पक्ष मजबूत, कार्य व्यापार में अनुकूलता, नौकरी सुखद। आय कम - खर्च अधिक।

(नीतिकथा)

जीवन का सत्य

- श्री के.रामनाथन

धर्मपुर गाँव में एक बूढ़ी रहती थी। उसके पति कई साल पहले मर चुका था। उसका एक बेटा था। वह दूसरे गाँव में काम करता था। बेटा महीने में एक बार घर आकर अपनी माँ से मिलता था। बूढ़ी गरीब तो थी पर उसका दिल दया से भरा रहता था। वह रोज सबेरे रोटी पकाते समय प्रथम दो रोटियों को लेकर घर के बाहर दीवार पर रख देती थी। उसका सोचना थी कि वह रोटी किसी गरीब व्यक्ति की भूख मिटायेगी या तो कोई पक्षी उसे खाकर आराम रहेंगे। इस प्रकार वह हर दिन दो रोटियाँ घर के बाहर दीवार पर रखती आ रही थी।

एक बार उस गाँव में एक बूढ़ा भिखारी आया था। वह इतना कमजोर था कि लाटी के सहारे चलता था। उसने जब भीख माँगने आये तो देखा कि उस बूढ़ी के घर के दीवार पर दो रोटियाँ रखी हुई हैं। वह बड़ी खुशी से उनको लेकर मंद आवाज में कुछ गुनगुनाता हुआ आगे बढ़ा। वह रोज उस घर के दीवार पर रखी गयी रोटी को लेकर यह गुनगुनाता जा रहा था कि तुमसे किये गये कुकर्म तुम्हारे पास ही रहेंगे और तुमसे किया गये सुकर्म तेरे पास लौट आयेंगे। जब-जब बूढ़ा उन रोटियों को ले जा रहा था तब-तब वह इस वाक्य को गुनगनाता जा रहा था। एक दिन बूढ़ी ने उसे सुना और उसको बूढ़े पर बड़ा क्रोध हुआ। उसने सोचा कि हम तो रोज रोटी बनाकर दीवार पर रखते हैं। यह बूढ़ा भी उसे हर दिन ले जा रहा है। पर वह एक दिन भी उस रोटी की रुचि के बारे में एक शब्द भी नहीं कहता। वह कोई आशीर्वाद भी नहीं देता। बल्कि उसके बदले यही कहकर बढ़ता कि तुमसे किये गये कुकर्म तुम्हारे पास ही रहेंगे और तुमसे किया गये सुकर्म तेरे पास लौट आयेंगे। यह सुनते सुनते बूढ़ी का गुस्सा रोज अधिक बढ़ता रहा।

वह उस दिन भी हमेशा की तरह दो रोटियाँ दीवार पर रखकर लौट ही रही थी, तब वह बूढ़ी लाटी टेकते हुए आ गया। उसने रोटी लेते हुए वही वाक्य दुहराता हुआ निकल गया। अब बूढ़ी से रहा न गया। उसने मन ही मन उस बूढ़े को सबक सिखाना चाहा। अगले दिन उसने उन दो रोटियों में विष लेपकर रखने का निर्णय किया। लेकिन उसकी ममता की भावना ने उसे ऐसा बुरा कर्म करने से रोक दिया। वह बड़े क्रोध से हमेशा की तरह उस दिन भी उन रोटियों को बाहर रख दिया।

दोपहर का समय था और कोई दरवाजा खटखटा रहा था। बूढ़ी जाकर दरवाजा खोली तो पाया कि उसका बेटा वहाँ खड़ा है। वह इतना थका-माँदा और उदास था। बूढ़ी ने बेटे को बड़े प्यार से घर के अन्दर ले जाकर पानी पिलाया। तब बेटा ने कहा माँ आज बड़े सबेरे मैं गाँव की ओर निकल पड़ा। दुर्भाग्यवश मेरे सारे रुपये गुम हो गये थे और खाने के लिए भी पैसा नहीं था। कोई परिचित व्यक्ति के न होने कारण मैं पैदल ही घर की ओर लौट रहा था। भूख के मारे मैं रास्ते में ही बेहोश हो गया। होश आने के बाद मैंने देखा कि एक बूढ़ा भिकारी मेरे पास खड़ा है। उसने ही मुझे बचाया था। उसने अपने पास की दो रोटियाँ देकर मेरी भूख दूर की थी। मैंने उसे धन्यवाद दिया। तब उसने मुझे देखकर यही कहा कि तुमसे किये गये कुकर्म तुम्हारे पास ही रहेंगे और तुमसे किया गये सुकर्म तेरे पास लौट आयेंगे। यदि वह बूढ़ा मेरी ऐसी सहायता नहीं करता तो मेरा बेहाल हो जाता। बेटे की बात सुनकर बूढ़ी सकपका उठी। उसके मन में तुरंत उस बूढ़े का स्मरण आया जो रोज उसके घर के दीवार पर रखी जाती रोटी ले जा रहा है। उसने समझ लिया कि उस बूढ़े ने ही बेटे के प्राण बचाया है। उसको इस बात पर बड़ी लज्ज़ा हुई कि क्रोध में आकर रोटी में विष मिलाना चाहा था। यदि उस दिन वह ऐसा कर दिया होता तो सब अनर्थ हो गया होता। उसके बाद उसने समझ लिया कि बूढ़ा जो गुनगुनाता है वह जीवन की सच्चाई है।

हाँ, यह तो सत्य है कि जो बोया जाता है वही काटा जाता है। यदि हम कुकर्म करें तो वही प्रतिफल के रूप में हमारे पास रह जाएँगे, वैसे ही यदि हम सुकर्म करें तो उसी के फल हमें प्राप्त होंगे।

चित्रकथा

गुरु की कृपा शिष्य पर

तेलुगु मूल - 'कलारत्न' डॉ.के.रविचंद्रन
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री तुंबलि शिवाजी

बेटा! गायें दया स्वभाव के होते हैं। इतना ही नहीं बछडे अधिक दयालु होते हैं। तुम फेन का सेवन करने के कारण, वे अपनी पेट को समेटकर तुम्हारे लिए फेन को अधिक छोडता होगा। इसलिए तुम इस प्रकार फेन को पीना ठीक नहीं है।
संध्या समय हो गया। अंधेरा छाने लगा। गायें आ गये लेकिन उपमन्य अभी तक क्यों नहीं आया।
गुरूजी उपमन्य को ढूँढते हुए चल पडा।
बेटा! उपमन्य! उपमन्य!
गुरुदेव! यहाँ स्वामी! यहाँ इस कुआँ में...
उपमन्य! इतना घोर कैसा हुआ?
गुरुदेव! जब से आप ने फेन को स्वीकार करने केलिए मना किया था, तब से मैं उपवास करता आ रहा हूँ। सबेरे गायों को चराते हुए शाम को आश्रम पहुँचता था। इस तरह कुछ दिन बीता। अब भूख बर्दशत नहीं कर सका। इसलिए अर्क पत्र खाया। विष से युक्त पत्तों को खाने से मेरा शरीर विष युक्त होकर मेरी आँखे चली गयी। फिर भी गायें चलते वक्त उसकी आवाज सुनकर उसके पीछे जाता था। आज अनजाने में इस कुआ में गिर गया। मैं चिंतित हूँ कि सारे गाय आश्रम में पहुँच गये या नहीं। इतने में आप आ गये।
बेटा अब मैं तुम्हें मंत्र का उपदेश करूँगा। उस मंत्र के प्रभाव से अश्विनी देवताओं को प्रसन्न करके उनके द्वारा दिया गया दूध पीओ। जिससे तुम्हारी आंखों की दृष्टि वापस आएगी।
उपमन्य पर अश्विनी देवताओं प्रसन्न हो गये।
बेटा! इस दूध को स्वीकार करो।
हे! अश्विनी देवताओं! मैं अपने गुरु को समर्पित किये बिना मैं ग्रहण नहीं कर सकता।
2
उपमन्य! तुम्हारी गुरु भक्ति से प्रसन्न हुआ। तुम फिर से अपनी आँखों से देखपाओगे।
बेटा! तुम, मैंने जो परीक्षा तुम्हारे लिए रखा था, उस में उत्तीर्ण हो गये हो। मुझे जितना ज्ञान वेदशास्त्रों में है उसे मैं तुम्हें सिखाऊँगा।
आप का आशीर्वाद देव! आप बाहर से कठिन होने पर भी, भीतर से मक्खन जैसे दिलवाले हो।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान,
तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।

2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।

3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।

4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।

5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।

6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।

7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।

8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।

9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।

10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।

11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।

12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम..
लिंग/आयु............, चंदा नंबर.......................
पता..
....
मोबाइल नं...

क्विज-38

1) तिरुमल में साल में एक बार संपन्न करनेवाले बडा उत्सव का नाम क्या है?
ज)..

2) ब्रह्मोत्सव में विशिष्ट वाहन सेवा का नाम क्या है?
ज)..

3) ध्वजस्तंभ पर किस चित्रपठ को आरोहण करते है?
ज)..

4) केवल शेषाचल पहाडियों में ही मिलने वाला विशेष पेड का नाम क्या है?
ज)..

5) तिरुमल में किस वाहन सेवा में स्त्री रूप में भगवान जी दर्शन देते है?
ज)..

6) ति.ति.दे. का भक्ति चैनल का नाम क्या है?
ज)..

7) तिरुपति रैल्वे स्टेशन के निकटस्थ विराजमान भगवान का नाम क्या है?
ज)..

8) प्रह्लाद का पोते का नाम क्या है?
ज)..

9) राजा बलि का गुरु का नाम क्या है?
ज)..

10) नौ दिनों तक देवी माँ को संपन्न करनेवाले उत्सव क्या है?
ज)..

11) नवरात्रों में अंतिम दिन मनाये जानेवाला त्यौहार का नाम क्या है?
ज)..

12) वैकुंठ से भूलोक में तिरुमल में किस जगह पर श्रीमन्नारायण ने प्रथम स्पर्श किया?
ज)..

13) धौम्य महर्षि ने किस शिष्य को परीक्षा किया?
ज)..

14) दिन-रात के प्रतीक में ब्रह्मोत्सव में संपन्न करने वाला वाहन सेवा क्या है?
ज)..

15) तिरुमल पुष्करिणी में किस भगवान जी को स्नान संपन्न करता है?
ज)..

बिंदी को जोड़िए

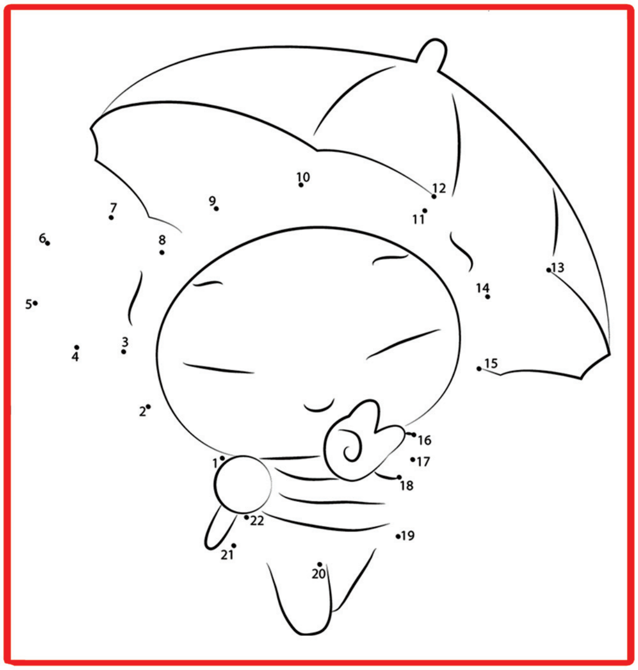

रंगों को भरिये क्या!

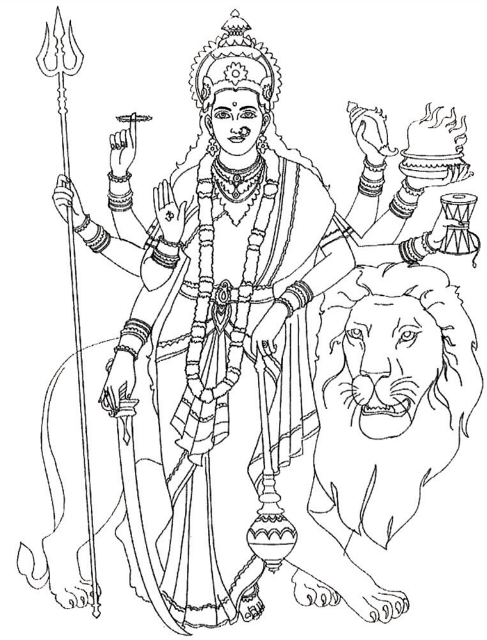

तालिका में सूचित विषय के अनुसार चित्रों को जोडिएँ

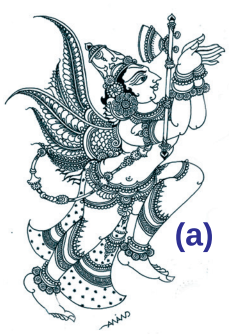
(a)

(c)

(e)

(d)

(f)

(b)

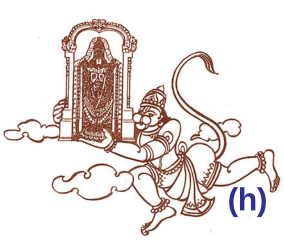
(h)

(i)

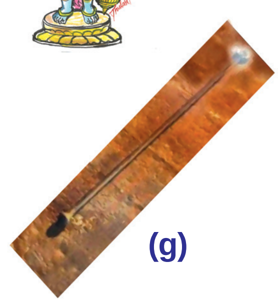
(g)

1) तिरुमल ब्रह्मोत्सव के संबंधित वाहन सेवा का नाम बताइये...

a) गरुड़ f) कल्पवृक्ष h) हनुमंत

2) भगवान जी का अवतार का क्रमांक विधान को लिख लीजिए...

b) विष्णु d) वामन c) त्रिविक्रम

3) तिरुमल मंदिर में मात्र ही दिखाने वाले कुछ चिजों को पहचान लीजिए...

g) खंता i) तुलाभार e) हुण्डी

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

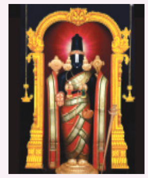

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
   ....
   पिनकोड ....
   मोबाइल नं ....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
   विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
   मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
   ई.एम.ओ. (EMO) :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877

दूरभाष : 2264359,
2264543.

संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri R.V.Vijayakumar, B.A.,B.Ed., and Published by Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D. on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

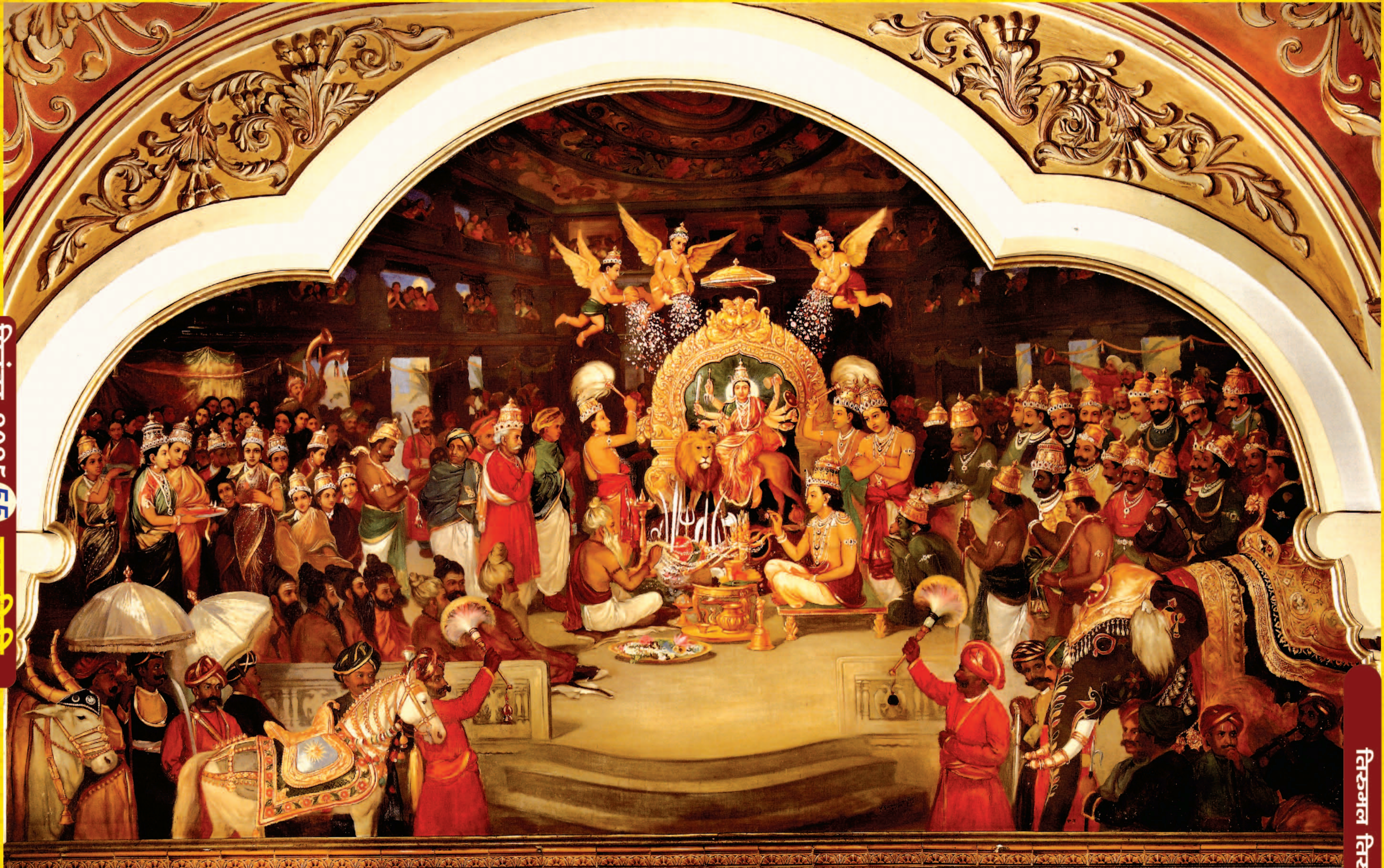

मैसूर महाराज के संस्थान में दसरा उत्सव के अंतर्गत आयोजित किया गया दुर्गापूजा से संबंधित वर्णचित्र है यह। 1934-1945 के बीच के समय में उस समय के चित्रकार श्री वै.सुब्रह्मण्य राजु के द्वारा बनाया गया रंगीन चित्र है।

(छायाचित्र सौजन्य - मैसूर पैलस बोर्ड, 2007.)

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams Printing on 25-08-2025 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 1st of every month.

देवी नवरात्रि प्रारंभ दि.22-09-2025